ÖǽÚ Ì èØ ßæ¾×Ø

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 13 | **मार्च-अप्रैल (संयुक्तांक)** 2012 | **अंक** 3-4

20 वाँ विश्व पुस्तक मेला 2012
एक विहंगम दृष्टि

विगत दिनों (25 फरवरी - 4 मार्च) दिल्ली के प्रगति मैदान में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा 20 वें विश्व पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। मेले में प्रगति मैदान के 12 में से 10 हॉल में पूरे विश्व के 1300 प्रकाशकों / प्रदर्शकों ने 2500 स्टॉल के माध्यम से अपनी शानदार भागीदारी दर्ज करायी जिसे सार्थक किया पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये 7,00,000 से भी ज्यादा पुस्तक-प्रेमियों ने अपनी सशक्त उपस्थिति से। विशेष रूप से हिन्दी पुस्तकों के हॉल में पाठकों की अप्रतिम सहभागिता ये सिद्ध कर रही थी कि हिन्दी में पुस्तक प्रेमियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। हर दूसरे साल लगने वाला, इस वर्ष युवाओं और बच्चों पर केन्द्रित, यह नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला तीन विशिष्ट अवसरों को केन्द्र में रखकर आयोजित किया गया—(1) भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होना (2) दिल्ली का देश की राजधानी के रूप में 100 वर्ष पूरे करना (3) नोबेल पुरस्कार विजेता कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयन्ती। इस वर्ष अधिकारों का आदान-प्रदान, खासकर विषय-वस्तु का अंकीकरण और कॉपीराइट के लिए समझौता के सन्दर्भ में, जैसे विषयों पर विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराया गया।

मेले के उद्घाटन अवसर पर केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री कपिल सिब्बल ने कहा कि बढ़ती लोकप्रियता और अफ्रो-एशियन क्षेत्र में एक बड़े पुस्तक कार्यक्रम के रूप में पहचान बना रहे इस मेले को सरकार प्रति वर्ष आयोजित करने का प्रयास करेगी। ऐसे ही संकेत नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक ने भी दिये कि मेले के प्रति वर्ष आयोजन पर ट्रस्ट गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा है। निश्चय ही पुस्तक प्रेमियों के लिए यह बहुत अच्छी खबर है।

यह 20वाँ विश्व पुस्तक मेला विशेष रूप में 'साहित्य और सिनेमा के बीच सम्बन्ध' पर आधारित था। प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने अपने सन्देश में कहा, 'सिनेमा पर ध्यान केन्द्रित करना हमें समाज को प्रभावित करने वाली अद्भुत परम्पराओं के बारे में जानने में मदद करेगा।' मेले में एक विशेष पैवेलियन में भारतीय सिनेमा से सम्बन्धित प्रचुर

शेष पृष्ठ 5 पर

मधु वाताः ऋतायते....

प्रवहमान है मधुमय पवन, मधु-क्षरण कर रहे हैं सर-सरित-सिन्धु, मधुमय हैं वन-उपवन-औषधियाँ, मधुमय हैं ऊषा-संध्या, मधुमय है धरती का कण-कण, मधुमय हैं दिशाएँ, मधुमय गगन, मधुमंत हैं सूर्य-चन्द्र!

प्रकृति का यह माधवी-उल्लास मौसम-वैज्ञानिकों की परस्पर-विरोधी घोषणाओं और तमाम पश्चिमी-विक्षोभों के बावजूद आदिम कवि की अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करता हुआ अधिकांश भारतीय-परिक्षेत्र में व्याप्त है। ऋतु-सन्धि के इस पावन मुहूर्त में नूतन वासंती-परिधान में सजी-सँवरी प्रकृति अपनी अंजलि में रंग-बिरंगे फूलों का अर्घ्य लेकर अपने आराध्य के चरणों में सर्वस्व समर्पण के लिए अग्रसर है। इधर खेतों में फसलें लहलहा रही हैं, आम्र-मंजरियों से लदे हैं रसाल-वृक्ष, कोयल कूक रही है, मदमत्त हैं कृषकों के मन-मयूर फिर क्यों न हो पृथ्वी की उर्वरा-शक्ति का पूजन, उत्सव का आयोजन! न-मालूम कितनी पीढ़ियों से सहेजी हुई यह दिव्य-सम्पदा अपना अवगुंठन हटाकर स्वत: व्यक्त हो जाती है और उल्लास-स्फुरित मानव-मन सामूहिक तौर पर कहीं वीशु, कहीं बीहू, कहीं युगादि, कहीं बैसाखी, कहीं नवरेह, कहीं नवरोज़ जैसे अलग-अलग नाम देकर नववर्ष का अभिनन्दन करता है, इसी गुड़ी-पाडवा या नव संवत्सर 'विश्वावसु' का अभिषिंचन करते हुए एक नये काल-आयाम में प्रवेश कर रहे हैं हम और हमारा पार्थिव-संसार!

यद्यपि हमारे संसार में क्रमानुक्रम से रोज की उथल-पुथल जारी है। हर आदमी अपने काम से बावास्ता दौड़-भाग कर रहा है। राजनीतिक-हलचलों के बीच पाँच प्रान्तों में चुनाव हुए और सत्ता-समीकरण बदल गये। ईमान के मजबूत हमारे प्रधानमंत्री अपने ही लोगों के चक्रव्यूह में घिरकर हर नाजुक मौके पर असहज, असहाय नज़र आते रहे। जिसकी ताजी मिसाल है रेल-बजट पेश करने के साथ रेलमंत्री का त्यागपत्र और प्रतिस्थानीय रेलमंत्री द्वारा प्रस्तावित बजट के प्रावधानों को वापस लिया जाना। इस नहले पर दहला साबित हुआ योजना-आयोग द्वारा प्रस्तुत गरीबी-रेखा पर गुज़र करने वाले सामान्य-गरीब की आमदनी का आँकड़ा, जिस पर संसद में सरकार की किरकिरी हुई। जिस दिन माननीय वित्तमंत्री अपना बजट पेश कर रहे थे, सांसदों के चेहरे पर तनाव था, बाज़ार नीचे जा रहा था, सेंसेक्स में गिरावट दर्ज़ की जा रही थी, उसी दिन, उसी दरम्यान बांग्लादेश के मीरपुर में सचिन तेंदुलकर अपने शतकों का शतक पूरा कर रहे थे। इस शतकीय-शतक ने वित्तमंत्री के बजट-विषाद में कुछ देर के लिये ही सही उल्लास घोल दिया हालांकि हम मैच हार गये। इन कुछ तस्वीरों के समानान्तर माताएँ खाना पका रही हैं, बच्चे इम्तहान दे रहे हैं, किसान खेतों में हैं, मन्दिरों में नवरात्रि की साधना चल रही है, आस्था का सैलाब उमड़ रहा है।

वस्तुत: यह चित्रांकन प्रकृति के वासंती-उल्लास का विद्रूप है जिसके कुछ क्षण आशा-उल्लास-उमंग भरे हो सकते हैं किन्तु अधिकांश अवसाद-ग्रस्त हैं। आखिर ऐसा क्या है जिसे पाने के लिए हम खोते जा रहे हैं अपने हृदय का चिर-संचित वैभव, किस

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

उपलब्धि की खातिर अपनी अस्मिता दाँव पर लगाकर लुटाये जा रहे हैं अपना सर्वस्व? कुछ क्षण ठहरकर, कुछ अवकाश लेकर हमें सोचना होगा कि आखिर वह कौन-सा तत्व है जो जीवन की विसंगतियों को छंदोबद्ध-सुसंगति देता है, विषमताओं को दूर करते हुए हमारी चेतना को उन्मुक्त, उल्लासमय-जीवन की प्रेरणा देता है? अपनी-अपनी सोच के मुताबिक हमें खुद खोजना होगा अपनी चेतना का उत्प्रेरक-सत्व जो जीवन की किसी भी परिस्थिति का डटकर सामना करता है, मनो-मस्तिष्क को सन्तुलन प्रदान करता है। अंत:ऊर्जा का यही विकीरण तो व्यक्त हो रहा है ऋतुराज के उन्माद में, प्रकृति के चिद्विलास में जिसकी प्रत्यक्ष आध्यात्मिक-अनुभूति को नज़रअंदाज़ करते हुए हम भाग रहे हैं, दौड़ रहे हैं और खो रहे हैं अपना सब-कुछ, अपना 'आपा'।

सच तो यह है कि भौतिक-विकास के साथ भौतिक-समृद्धि की लालसा में हमने प्रकृति का अपरिमित दोहन कर लिया है और लगातार करते चले जा रहे हैं। कभी-कभी प्राकृतिक प्रतिक्रिया की विकरालता देखकर हम विचलित हो उठते हैं। अचानक जागृत हो उठता है हमारा पर्यावरण-प्रेम और फौरी तौर पर हम नदियों, पहाड़ों, जंगलों को बचाने की मुहिम छेड़ देते हैं। यह सब विश्व जल-दिवस, पृथ्वी-दिवस आदि दिवसों की तरह तात्कालिक होता है, जिसके समानान्तर राजनीतिक-कारपोरेट्स के मोहरे माफिया-ठेकेदार सक्रिय रहते हैं। जंगल चीखते रहते हैं, बिलबिलाती रहती हैं नदियाँ, रुदन करते रहते हैं मौन पर्वत, भला कौन सुनता है अचेतन के अवचेतन की वेदना-भरी पुकार!

वैश्वक-स्तर पर प्रायोजित 'दिवसीय' आडम्बरों, परंपरित मेलों, उत्सवों-त्यौहारों से बेपरवाह मधु-वातास में झूमता गुनगुना रहा है कवि-मन—

हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।
वही हाँ, वही जो सभी प्राणियों को
पिला प्रेम-आसव जिलाये हुए हूँ
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ।

इसी शब्दांजलि के साथ नववर्ष की शुभाशंसाएँ.....!

सर्वेक्षण

• **नि:शब्द-झंकार :** शब्दों की अर्थ-ध्वनि नि:शब्द यानी बिना आवाज़ किये मनुष्य की चेतना को झंकृत कर जाती है। बोध के स्तर पर यह झंकार मनुष्य में अनजाने ही गुणात्मक-परिवर्तन उपस्थित करती है। इस तथ्य का साक्षात्कार पिछले दिनों दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित विश्व-पुस्तक-मेले के नौ दिवसीय आयोजन में लगातार होता रहा। इस दरम्यान यहाँ भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विश्व की अधिकांश भाषाओं की पुस्तकें थीं, लेखक थे, प्रकाशक थे, पाठक थे और पर्यटक थे। इन सबके बीच सतत चल रहा था एक संवाद जिसकी अर्थानुभूति की व्यंजना दु:साध्य तो नहीं किन्तु कठिन अवश्य है। वैसे इलेक्ट्रॉनिक-मीडिया के इस दौर में आयोजित 20वें विश्व-पुस्तक-मेले ने प्रिण्ट मीडिया के महत्व को रेखांकित करते हुए देश के पहले इलेक्ट्रॉनिक-मीडिया भारतीय-सिनेमा के शताब्दी-वर्ष में भारतीय सिनेमा पर लिखी गयी किताबों के मूल्यांकन में अपनी भूमिका का सफल निर्वहन किया। साथ ही ई-बुक्स ने अपनी आहट से प्रकाशकों, पाठकों को सचेत किया।

•• **वादा तेरा वादा :** जनता की बेहतरी और तरक्की के वादे करतीं राजनीतिक पार्टियाँ लोकतांत्रिक-पद्धति की चुनाव-प्रक्रिया में जब ज़मीन पर उतरकर जनता का सामना करती हैं तो उन्हें आटे-दाल का भाव मालूम हो जाता है। पिछले दिनों पाँच राज्यों में चुनाव हुए जिसमें सबसे दिलचस्प तो उत्तर प्रदेश का चुनाव था जहाँ कांग्रेस ने अपनी पार्टी के सबसे शक्तिशाली युवा नेता को आगे कर सारे दाँव आजमाये। लेकिन सब धरे के धरे रह गये और जनता ने पिछली सरकार के कारनामों को देखते हुए उसे भी नकार दिया। वहीं एक पूर्व-परीक्षित पार्टी के युवा नेता द्वारा शालीनता के साथ गलती स्वीकार करने एवं ज़मीनी स्तर पर विकास की बातें करने पर उसी पार्टी को प्रदेश का नेतृत्व सौंप दिया। संप्रति समाजवादी पार्टी के माननीय मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से जनता की अपेक्षा है कि उनके वादे, वादे ही न रहें बल्कि अमल में लाये जाएँ। अन्यथा ये जो जनता है, गुनगुनाती रहती है 'वादा तेरा वादा' और चुपचाप सत्ताधीशों को उनकी औकात बता देती है।

•• **रक्षत गङ्गाम् :** हमारी सांस्कृतिक-धारा की अमृत-प्रवाहिनी नदी गंगा को राष्ट्रीय-नदी का दर्जा प्रदान करने के बावजूद गंगा के निर्मल-अविरल प्रवाह को बनाये रखने में केन्द्र-सरकार अक्षम साबित हुई है। गोमुख और गंगोत्री को छोड़ दें तो हरिद्वार से ही आरम्भ प्रदूषण का सिलसिला गंगासागर तक जा पहुँचता है। इसी तथ्य से विचलित स्वामी निगमानंद ने पिछले वर्ष 63 दिनों की अनशन-साधना के बाद देहत्याग किया था। इसी भगीरथ-साधना के क्रम में प्रख्यात नदी-वैज्ञानिक प्रो० जी०डी० अग्रवाल उर्फ स्वामी सानंद (संन्यास-दीक्षा के बाद स्वामी सानंद) ने काशी में अनशन आरम्भ किया, जिसे क्रमश: जन-समर्थन भी मिलने लगा, धर्म से ऊपर उठकर हिन्दू-मुसलमान सभी उनके पक्ष में लामबंद हो गये। अनशन के साठ दिन बाद सत्ता-तंत्र सक्रिय हुआ और स्वामी सानंद की प्राणरक्षा के लिए उन्हें अस्पताल-दर-अस्पताल घुमाते हुए दिल्ली के 'एम्स' में ले जाकर दाखिल कर दिया गया। इस क़वायद के बीच स्वामीजी कहते रहे 'चिन्ता मेरी नहीं गंगा की करो', अंतत: प्रधानमंत्री के लिखित आश्वासन पर केन्द्रीय-मंत्री के हाथों मधु-जल ग्रहण करके स्वामीजी ने अपना द्वैमासिक निर्जल-अनशन भंग किया। किन्तु उनके द्वारा आरम्भ की गयी इस भगीरथ-साधना का क्रम अविच्छिन्न रहा और उसी क्रम में दूसरे भगीरथ ने अनशन आरम्भ कर दिया, उन्हें भी अस्पताल ले जाये जाने के बाद तीसरे ने। अब तो तय है कि यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक मोक्षदा-गंगा निर्मल, अविरल रूप से प्रवाहित न होने लग जाये। आज के दौर में यह एक सुखद संयोग है कि वैज्ञानिक एवं आस्थाजन्य-आग्रह के साथ शत-सहस्र लोग इस भगीरथ-साधना के लिए तत्पर हैं। चारों ओर गूँज रही है एक ही आवाज़—रक्षत गङ्गाम्! रक्षत गङ्गाम्!

—परागकुमार मोदी

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

समुद्रमंथन का परिणाम

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

राजनैतिक-समुद्र का मंथन, कई महीनों की कशमकश तथा गहमागहमी के बाद अन्ततः समाप्त हो गया। निर्वाचन-आयोग को 'मन्दराचल' की मथानी तथा अपने पापाचार-षड्यंत्र के 'वासुकि' को रस्सी बनाकर नेताओं ने अद्भुत मंथन किया। नेताओं के दल में भी वही पुराने मंथक थे—कुछ देवता तथा कुछ दानव! और इस मंथन से निकला क्या? सभी जानते हैं—चौदह तत्त्व!

श्री-मणि-रम्भा-वारुणी-अमिय-शंख-गजराज।
कल्पद्रुम-शशि-धेनु-धनु-धन्वन्तरि-विष-बाज॥

आइये, थोड़ी समीक्षा करें। **श्री** का अर्थ है व्यक्ति-रूप में देवी लक्ष्मी जो भगवान् विष्णु की पत्नी हैं। परन्तु सामान्य अर्थ में 'श्री' का तात्पर्य है शोभा, वैभव, ऐश्वर्य। इस मंथन में 'श्री' मिली समाजवादी दल को, जिसने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर सबको धूल चटा दिया। आज वह वैभव-ऐश्वर्य के शिखर पर है।

मणि व्यक्तित्व की पहचान कराता है। योग्य व्यक्ति पहने तो प्रशंसित होता है, अयोग्य पहन ले तो उपहासास्पद बन जाय। समाज में मुँह दिखाना मुश्किल हो जाता है। बहरहाल यह (काल) 'मणि' प्राप्त हुआ मान्यवर कलमाडी तथा उन्हीं की थैली के चट्टे-बट्टों को। टू जी स्पेक्ट्रम तथा कामनवेल्थ क्रीडा-आयोजन का धन पचा कर, मुँह पर कालिख पोत कर, भाई-बन्धुओं के साथ कारागार का सुख भोग रहे हैं।

रम्भा मिलीं फलाने सिंह को, जिनकी कभी तूती बोला करती थी। परन्तु हाय रे दुर्भाग्य! समुद्र-मंथन की इस आँधी में न ही प्रिय भौजी काम आईं, न ही भैया (गंगा किनारे वाला छोरा) परन्तु देवांगना रम्भा ने साथ नहीं छोड़ा। धन्य है उनकी निष्ठा!

वारुणी मिली मेरे एक पट्ट शिष्य को। उनकी तृष्णापिपासा का कोई अन्त नहीं। उसके नशे में उन्होंने मर्यादा, कृतज्ञता, आत्मीयता सब भुला दिया। यूँ तो 'वारुणी' में सारा बालीवुड डूबा है, अधिसंख्य सांसद डूबे हैं। तथापि कुछेक पर वह विशेष प्रभावी है।

अमिय यानी अमृत मिला चौधरी अजीत सिंह को! विमानन-मंत्रालय मिलते और सोनिया-मन्दिर की चौखट डाँकते ही चौधरी जी के कण्ठगत प्राण, शरीर में वापस लौट आये। अब देख रहा हूँ दूरदर्शन पर कि चुचके गालों की झुर्रियाँ भी गायब होने लगी हैं। जब-जब चौधरी जी की नाव डूबने को होती है तो वह यही फन अपनाते हैं, यानी अपने चार-छः सांसदों को साथ लेकर नीलामी के चौक में आ जाना तथा औने-पौने भाव बिक जाना।

शंख मिला भारतीय जनता पार्टी को! अब बजाते रहो गलफुलने राष्ट्रभक्तों! एक तपस्वी के पुण्यप्रताप से तुम्हें भी सत्ता का एक अवसर मिल गया था। परन्तु अब वह मिलने वाला नहीं। तुम किसी भले आदमी को तो पार्टी में आने नहीं दोगे। विद्वान्, चरित्रवान्, लोकप्रिय तथा अजातशत्रु से तुम्हारी जानी दुश्मनी है। आपस में तुम कितने विश्वस्त, अनुरक्त एवं एकजुट हो—यह किसी से छिपा नहीं। यदि यही एक गुण होता तो निश्चय ही आज की भारतीय राजनीति में तुम सर्वोत्तम थे। परन्तु तुम गुणग्राही नहीं हो, उदार नहीं हो!

तुम अभी भी प्रमोद महाजन की विधवा की, पार्टी में भरती के लिये बेताब हो, परन्तु मेरे यानी प्रो० राजेन्द्र मिश्र के बारे में तुम्हारी क्या सोच है? मैं भी राजनीति में सक्रिय होना चाहता हूँ, राष्ट्रोद्धार-हेतु! राम को छुआ, सदा-सदा के लिये विवादास्पद बना दिया (अब तो तिलांजलि ही दे दी) देववाणी संस्कृत की वकालत की, उससे विवादास्पद बना दिया। क्यों तुम्हें लोग आर०एस०एस० की कठपुतली कहते हैं? ऊँट की चोरी तुम 'निहुरे-निहुरे' क्यों करते हो? यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ और तुम्हारा सिद्धान्त, कार्यविधि समान या एक है तो संकोच किस बात का? डंके की चोट पर क्यों नहीं कहते कि हम दोनों एक हैं! संभव है कि अधिसंख्य भारतीय तुम्हें पसन्द करें। यदि यह नहीं कर सकते तो बजाते रहो अपना पाञ्चजन्य!

गजराज किसे मिला? यह बताने की भला क्या आवश्यकता? मायाजी जिन गजराजों के पीछे सती हो गईं, अन्ततः मात्र वही निर्जीव पाथर के हाथी उनकी झोली में आये! अब बहनजी! एक बाँस की सीढ़ी बनवा लीजिये और रोज अपने इन्हीं ऐरावतों पर चढ़ा-उतरा कीजिये। पाँच साल का समय आराम से कट जायेगा।

कल्पद्रुम यानी पारिजात देवराज इन्द्र के उद्यान नन्दन का शोभावर्धक है। यह भी समुद्रमंथन से ही उत्पन्न हुआ था। इसे 'कामतरु' अर्थात् समस्त आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाला बताया गया है। सोनिया जी के रूप में यह कल्पवृक्ष हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी को प्राप्त है। इतना 'सुलभ प्रधानमंत्री-पद' पं० नेहरू से लेकर रॉव तक—किसी को नहीं मिला था। यह विलक्षण सुवर्णसिद्धि-योग आखिर क्यों और कैसे? क्या और किसी में प्रधानमंत्री बनने की लालसा नहीं? योग्यता नहीं? न, न—ऐसा कुछ भी नहीं। बस, एक मनमनोहन जी को छोड़ किसी और को 'कल्पद्रुम' की छाया मयस्सर नहीं! 'कल्पद्रुम' की जय हो, कल्पलता की जय हो!

शशि यानी चन्द्रमा इस मंथन का नवाँ रत्न है। चन्द्रमा अपनी शीतलता, आह्लादकता तथा कलावत्ता के लिए जाना जाता है। इस नये सागर-मंथन में यह शशि मिला है श्री विजय बहुगुणा को! कभी यह उनके स्वनामधन्य पिता, हम सबके प्रीतिपात्र, उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री पं० हेमवतीनन्दन बहुगुणा के पास था। उस शीतल चन्द्रिका में बहुगुणा जी ने बड़ा नाम-यश कमाया। चिरकाल बाद वह पुनः अपने कुल-घर में आया है।

धेनु हैं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता जी। जब ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के आश्रम में, विश्वामित्र के सैनिकों ने कामधेनु का बलपूर्वक अपहरण किया तो उसने वसिष्ठ से पूछा कि आप स्वयं अपनी इच्छा से मुझे अर्पित कर रहे हैं अथवा ये लोग मुझे बलात् ले जा रहे हैं? ब्रह्मर्षि ने सन्तप्त मन से कहा—कामधेनु! मैं क्षमाशील तपस्वी ब्राह्मण हूँ। शस्त्रप्रयोग से तुम्हारी रक्षा कर पाने में समर्थ नहीं। ये विश्वामित्र के सैनिक तुम्हें बलपूर्वक ले जा रहे हैं।

इतना सुनते ही कामधेनु ने कहा—तो ब्रह्मर्षि! आप सन्तप्त न हों। अपनी रक्षा मैं स्वयं करती हूँ।

यह कह कर कामधेनु ने भीषण उछल-कूद प्रारम्भ की। उसके नथुनों से असंख्य कोल-किरात-पुलिन्द सैनिक प्रकट होने लगे। उसकी हुंकार मात्र से विश्वामित्र के सैनिक बहरे हो गये तथा विक्षिप्त हो भागने लगे। देखते ही देखते, विश्वामित्र की बची-खुची सेना भाग खड़ी हुई तथा कामधेनु पुनः प्रकृतिस्थ हो गई।

ममता जी का व्यक्तित्व उसी 'सुरधेनु' के समान है। वह नग्नस्वार्थ, अराष्ट्रीय-प्रस्ताव, अत्याचार तथा जनतोत्पीड़न से समझौता नहीं कर सकतीं। मामला चाहे नन्दीग्राम के किसानों का, चाहे रेलवे-बजट का—ममता बनर्जी की भूमिका विलक्षण रही है। न कोई दिखावा, न झूठी शान, न पद-प्रतिष्ठा की ऐंठ! ममता राष्ट्रियता की प्रतिमूर्ति हैं। उनके व्यक्तित्व में भगवती दुर्गा के 'कौमारी' रूप का तेज है।

समुद्रमंथन से यह जो **धनु** निकला वह वस्तुतः शार्ङ्ग-धनुष् है जो सर्वसम्मति से मंथन के पुरोधा विष्णु को सौंप दिया गया था। इस समय यह धनुष् साझे में है। छः महीने यह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पास तथा छः महीने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के पास रहता है। इसकी यह विशेषता है कि इस पर प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। लुच्चे, लफंगे, समाजद्रोही, आतंकी इतने से ही निष्क्रिय एवं पंगु हैं कि मुख्यमंत्री जी कभी भी डोरी चढ़ा सकते हैं। और तब जो होगा, उसका उन्हें पता है।

धन्वन्तरि हैं बाबा रामदेव, जिन्होंने विविध रोगों से ग्रस्त देवों का संभव इलाज करना चाहा। वह मूलत: देववैद्य हैं। परन्तु उनका औषधोपचार—देवों तथा दानवों को समान रूप से उपलब्ध है। बाबा रामदेव ने अपनी नाड़ी-परीक्षा से बताया कि अधिकांश राजनेता राष्ट्रद्रोह, अभद्रवाक्, अर्थ-अशौच, षड्यन्त्र, स्वार्थान्धता, स्वाभिमानराहित्य तथा लम्पटता जैसे जानलेवा महारोगों से ग्रस्त हैं। उन्होंने मन, वचन तथा कर्म के स्तर पर उनका इलाज करना चाहा। परन्तु रोगियों ने स्वयं उन्हें 'रुग्ण' सिद्ध कर दिया।

विष यानी हलाहल, कालकूट! मंथन से यह भी सहसा प्रकट हुआ तथा सारे भारत को दग्ध करने लगा। परन्तु करुणा-वरुणालय, परदु:खकातर, शम्भु-स्वरूप **अन्ना हजारे** ने उसे गटक लिया। अभी भी वह उनके कण्ठ में अटका पड़ा है। एक बार पुन: राष्ट्र की रक्षा हो गई। परन्तु यह कहना कठिन है कि अन्ना जी कब तक यह कालकूट अपने कण्ठ में रखेंगे?

इस मंथन का चौदहवाँ रत्न है—**उच्चै:श्रवा घोड़ा**। पुराणयुग में तो यह भी देवराज इन्द्र को ही मिला था। परन्तु अबकी बार यह महाशक्तिशाली अश्व मिला है पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल को, जिसकी पीठ पर, अपने भारी-भरकम सुपुत्र सुखवीर सिंह के साथ सवार, मुख्यमंत्री जी हवा से बातें कर रहे हैं। बस, भय यही है कि कहीं मनोवेगगामी यह अश्व बाप-बेटे को किसी खाई में न धकेल दे! असल में मंथन से निकला देव-अश्व है यह। यह लगाम तो पहनता नहीं। पिता जी उसकी अयाल-मात्र पकड़े बैठे हैं। और पुत्र जी पिता जी की पीठ! वस्तुत: हैं दोनों पूर्णत: अरक्षित! यदि कहीं अमरिन्दर सिंह ने घोड़े को बिदका दिया तो अनर्थ हो सकता है।

महाभारत का एक प्रेरक प्रसंग है। मद्रदेश के राजा शल्य जब पाण्डवों की सहायतार्थ अपनी सेना लिये कुरुक्षेत्र की ओर चले तो चतुर दुर्योधन रास्ते में ही उनकी पहुनाई करने लगा। उसकी सेवा से प्रसन्न शल्य ने वर माँगने को कहा तो दुर्योधन ने कहा—मामा जी! आप जैसे नकुल-सहदेव के मामा हैं वैसे ही मेरे भी। अत: इस युद्ध में मेरी ओर से लड़ें। शल्य बात हार चुके थे। 'एवमस्तु' कह दिया।

यह सुनते ही धर्मराज युधिष्ठिर ने माथा पीट लिया। सगे मामा पाण्डवों के? रिश्तेदार अपने? और युद्ध करें कौरवों की ओर से?

जब कर्ण सेनापति बना तो शल्य उसके सारथी बने। कृष्ण कर्ण का 'वन प्वॉइण्ट प्रोग्राम' जानते थे—अर्जुन का वध! वह युधिष्ठिर को सिखा-पढ़ा कर, चुपचाप घनी रात में, मामा शल्य के खेमे में पहुँचे। युधिष्ठिर ने सीधी बात की—मामा! मैं जानता हूँ कि दुर्योधन ने छल-छद्म से आपको अपनी ओर कर लिया है। हमें उसका कोई क्लेश नहीं। मैं तो आज आपसे बस इतना माँगने आया हूँ कि सारथी के रूप में रथ-संचालन करते हुए आप निरन्तर अर्जुन की प्रशंसा तथा कर्ण की निन्दा करते रहें। इससे उसका मन मर जायेगा। वह हतप्रभ हो उठेगा। शल्य ने मान लिया। जब-जब कर्ण डींगे मारता, शल्य अर्जुन का बखान कर उसे पटक देते।

लगभग यही काम दिग्गी राजा ने अपने नायक राहुल भैया के साथ किया, जिसका प्रत्यक्षदण्ड उन्हें भोगना पड़ा। कभी बाबा रामदेव को 'ठग' कह कर, कभी अन्ना हजारे को आर०एस०एस० का एजेण्ट कह कर बाबू गुना-नरेश ने राहुल भैया का पथ कण्टकाकीर्ण ही कर दिया। उनकी असभ्य टिप्पणियों से अन्ना, रामदेव तथा आर०एस०एस० का तो मान बढ़ा परन्तु राहुल भैया जमीन पर आ गये।

मरी कांग्रेस को जिलाने के लिए, सिर पर मँडराते, हृदय में तूफान उठाते अपने विवाह-प्रसंग को भी दर-किनार कर राहुल भैया ने रात को रात और दिन को दिन नहीं समझा। उन्हीं के साथ बेचारी प्रियंका तथा अस्थिकंकाल-मात्र शेष वे भी लगी रहीं जिनका एक पाँव राजनीति की नाव में तथा दूसरा यूनिवर्सिटी की नाव में रहा। परन्तु राहुल भैया की, 'दाण्डी' की तर्ज पर की गई 'पाखण्डी' यात्रा काम नहीं आई। माया के पाषाण-गजों की निन्दा करते-करते मुँह में 'फोंफटी' पड़ गई। बेचारे व्यक्तित्व का जादू बिखेरने हेतु कुर्सी छोड़ 'झेंलगे' पर बैठे, जबर्दस्ती सबका सुख-दु:ख पूछा जिससे न इस जन्म में उनका सम्बन्ध था, न आगे कभी होगा। सड़क छोड़ खेतों की मेड़ों पर चले।

पर मिला क्या? कुछ नहीं। उत्तर प्रदेश की पातकी जनता का इतना पुण्योदय कहाँ कि वह विवेक से काम ले? वह तो उसी को चुनेगी जो अगले पाँच वर्ष तक पैर की जूती बना कर उसका उपयोग करे। मुख्यमंत्री बनते ही अखिलेश बाबू ने सर्वलोक-तिरस्कृत राजा भैया को (साधारण नहीं) कैबिनेट-मंत्री बना दिया—तो क्या वोट देने वाली जनता से पूछ कर? क्या आगे भी वह जनता की राय लेंगे? जनता का मतलब है आलू! आलू का बस काम ही इतना है—पानी में उबलना, भरता बन कर पेट में जाना और अन्तत: निचले द्वार से निकल, खेत की मिट्टी में मिल जाना।

परन्तु मैं अपनी बात समाप्त करने से पूर्व प्रिय नये मुख्यमंत्री को सलाह देना चाहूँगा कि मेरे लाल! गौतम बुद्ध के बताये 'मज्झिम पटिपदा' (मध्यम वर्ग) से चलना। वैसे भी, राजनीति में तुम्हारी पैठ अपने नहीं, बाप के कारण है। तुम्हारे सव्यसाची पिता जब तुम्हारी जन्मदात्री को 'चक्रव्यूह-प्रसंग' सुना रहे थे तो उन्हें भी सुभद्रा की तरह नींद आ गई थी। फलत: तुम्हारी भी स्थिति अभिमन्यु जैसी ही है। कूदते-फाँदते तुम चक्रव्यूह का भेदन तो कर चुके, कुर्सी पर भी बैठ गये, परन्तु छ: महारथियों से सावधान रहना। ये सब शत्रु-खेमे के ही नहीं, अपने खेमे के भी हैं। इन्हें तुम जैसे 'कच्चे-खट्टे आम' का शर्बत बनना अच्छा नहीं लगा है अत: कभी भी भितरघात कर सकते हैं।

> मन को स्वतंत्र छोड़ देने पर वह नाना प्रकार के संकल्प, विकल्प करने लगता है, परन्तु विचाररूपी अंकुश से मारने पर वह स्थिर हो जाता है।

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम (क्या भारत का नागरिक हैं?) (यदि विदेशी हैं तो मूल देश) पता	अनुरागकुमार मोदी जी हाँ चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम (क्या भारत का नागरिक है?)	अनुरागकुमार मोदी जी हाँ
5. सम्पादक का नाम (क्या भारत का नागरिक हैं?)	पुरुषोत्तमदास मोदी जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(दिनांक 1 मार्च, 2012) **(अनुरागकुमार मोदी)**

पृष्ठ 1 का शेष

20 वाँ विश्व पुस्तक मेला 2012 : एक विहंगम दृष्टि....

सामग्री व पुस्तकें उपलब्ध थीं। विशिष्ट साहित्यिक पृष्ठभूमि की फिल्मों के प्रदर्शन का भी प्रबन्ध था। साथ ही समय-समय पर पैवेलियन में आ रहीं फिल्मी हस्तियाँ पुस्तक-प्रेमियों को विशेष रूप से रोमांचित कर रही थीं। 'दिल्ली के 100 सालों की कहानी तस्वीरों की जुबानी' तथा 'कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर से सन्दर्भित विशिष्ट प्रदर्शनी' लोगों के विशेष आकर्षण की केन्द्र रही।

इस वर्ष पुस्तक मेले में लेखकों की जबर्दस्त भागीदारी देखने को मिली। पुस्तक विमोचनों का तो रेला सा लग गया। वाकई इस वर्ष यत्र-तत्र बजती हुई तालियाँ चमकते हुए कैमरों, रंग-बिरंगी पुस्तकों को हाथों में उठाकर प्रदर्शित करते साहित्यकारों, लेखकों, पाठकों की घुली-मिली भीड़ और उनके मध्यम-तेज शोर-शराबे ने 'मेले' शब्द को चरितार्थ कर दिया। हिन्दी प्रकाशकों के हॉल में मेले के लगभग हर दिन लगभग हर प्रकाशक के स्टॉल पर पुस्तकों का विमोचन होता रहा, विशेष रूप में कविता एवं कहानीकारों की पुस्तकों का। हिन्दी के महामहिम आलोचक नामवर सिंह और वरिष्ठ कवि, लेखक अशोक वाजपेयी ने सबसे ज्यादा पुस्तकों का विमोचन किया।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है जिसे परिभाषित कर रही थीं विभिन्न भाषाओं में ई-बुक्स और डिजिटल बुक्स के साथ-साथ बच्चों के लिए थ्री-डी पुस्तकें। बच्चों के लिए एक अलग मंडप की व्यवस्था भी की गयी थी जिसमें बाल साहित्य के अतिरिक्त कॉमिक्स, पजल्स, बोर्ड गेम आदि भी मौजूद थे।

इस बार विश्व पुस्तक मेला एक मिनी भारत के रूप में दिखाई पड़ रहा था। हर भाषा-भाषी की चाहत पूरी हो रही थी। पुस्तक मेले में जहाँ एक ओर अंग्रेजी और हिन्दी के स्टालों पर भारी भीड़ उमड़ती रही, वहीं भारतीय भाषाओं के स्टालों पर बहुत कम पुस्तक-प्रेमी दिखे। भारतीय भाषाओं में अधिकांशत: संस्कृत, उर्दू और पंजाबी भाषाओं के प्रकाशकों के स्टाल पर ज्यादा पुस्तक-प्रेमी दिखायी पड़े। मेले में कन्नड़ के 3, मलयालम के 13, मणिपुरी का 1, मराठी के 3, उड़िया का 1, पंजाबी के 8, संस्कृत के 19, संथाली का 1, सिंधी के 2, तमिल के 9, तेलुगु के 3 व उर्दू के 39 स्टॉल लगे थे। विश्व पुस्तक मेले में भारतीय भाषाओं को प्रतीकात्मक रूप से प्रतिनिधित्व दिया जाता रहा है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहनार्थ बेहतर तो यह होगा कि क्षेत्रीय स्तर पर मेलों का आयोजन किया जाय।

इस वर्ष लोगों का रुझान साहित्य पर कम और कॅरियर, धर्म और अध्यात्म से जुड़े विषयों की ओर ज्यादा प्रतीत हुआ। कहते हैं कि जीवन में सफल होने का दर्शन पुस्तकों में छिपा होता है, अत: लोग जिन्दगी की उलझनों का हल खोजने के लिए ऐसी पुस्तकों की तलाश करते रहे।

दिल्ली में हर संस्कृति की झलक देखने को मिलती है और दिल्ली में आयोजित इस विश्व पुस्तक मेले ने दूर-दराज से आये पाठकों को पुस्तकों के जरिये दुनिया के कई और रंग देखने का अवसर भी दिया। बड़े-बड़े सभागृहों में पाठक, पुस्तक-प्रेमी प्रकाशकों, लेखकों से कई सवाल पूछते नजर आये। लेखकों को भी अपने सृजन-कर्म के विविध पहलुओं से पाठकों का साक्षात्कार कराना पड़ा। कुछ पाठक तो सालों से न मिल पायी पुस्तकों की लंबी सूची के साथ दिखे। निश्चित रूप में यह विश्व पुस्तक मेला हमें नये पाठकों को पहचानने का, उनकी बदलती रुचि और पसन्द की पड़ताल का अवसर देता है।

पुस्तक मेले में कई सामान्य पाठक एक ही पुस्तक ढूँढ़ते नजर आये और वह थी 'अच्छी पुस्तक'। उनकी 'अच्छी पुस्तक' की खोज बार-बार जाकर प्रेमचन्द या शरतचंद्र या प्रसाद या भारतेन्दु की कोई पुस्तक पर जा कर खत्म होती थी। आज का साहित्य कौन पढ़ेगा? आज के समय से कौन वाकिफ होगा? प्रेमचन्द, शरतचन्द्र, प्रसाद, भारतेन्दु आज भी प्रासंगिक हैं लेकिन क्या आज के कवि, लेखक नहीं? समस्या है लोगों में जानकारी का अभाव और जानकारी के सृजनकर्ता मीडिया और बाजार की अप्रासंगिक भूमिका! आशा है यह वैश्वक समारोह पाठकों, मीडिया और बाजार के लिए नव-सूचनाओं का नव-द्वार खोलेगा और साहित्य व विभिन्न विषयान्तर्गत पुस्तकों के समकालीन दौर को भी आत्मसातकरेगा। आशा है अगली बार लोग 'अच्छी पुस्तक' की परिभाषा नये उदाहरणों के साथ देंगे।

उल्लेखनीय है कि जयपुर साहित्य सम्मेलन अपने शुरुआती कुछ ही वर्षों में लोकप्रियता की सारी हदें लाँघ गया और इस वर्ष पुस्तक मेले में उमड़ी भारी भीड़ ने भी लोगों को एक बार फिर से डिजिटल युग के इस दौर में पुस्तकों एवं साहित्य का समाज में स्थान पर सोचने हेतु विवश कर दिया है। यह सिद्ध करता है कि पुस्तकों एवं साहित्य का स्थान समाज में हमेशा से रहा है और हमेशा रहेगा।

विश्व पुस्तक मेला 2012 में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी के स्टॉल पर पुस्तकों का अवलोकन करते पुस्तक-प्रेमी

जयपुर साहित्य-उत्सव : 2012

जनवरी की खुशनुमा सर्दियों के दरम्यान बीसवीं-इक्कीसवीं सदी की वैश्विक साहित्य-चिन्ता से रूबरू था आमेर की पहाड़ियों के बीच बसा ऐतिहासिक नगर जयपुर। तमाम विवादों, आशंकाओं के बावजूद जयपुर के इस साहित्य-उत्सव ने अपने पाठकों-श्रोताओं से प्रबुद्ध हो रही नयी पीढ़ी से सार्थक संवाद स्थापित किया। इस उत्सव का विधिवत् उद्घाटन भूटान की महारानी आशी सांगे वांगचुक ने किया और आरम्भ गुरुवाणी, भक्ति-गान, बाऊल तथा सूफी-संगीत से हुआ।

जयपुर साहित्योत्सव में सुदूर अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका के लेखक उपस्थित थे तो पड़ोसी बांग्लादेश, पाकिस्तान और म्यांमार के भी। न केवल तहरीर चौक की व्यापक प्रतिक्रिया थी, पाकिस्तान की उथल-पुथल भी चर्चा का विषय रही। असहमति, सत्ता संत्रास, रंगभेद-लिंगभेद जैसे स्थाई सरोकार थे, तो इक्कीसवीं शती में महाशक्ति बन, कौन-कौन उभरेगा, उनका चरित्र कैसा होगा—इस पर भी चर्चा हुई। लेखन का तकनीकी पक्ष, कहानी किसको कहते हैं, कहानी और कविता, अनुवाद, आत्मकथा, इतिहास और पत्रकारिता प्रत्येक विषय पर चर्चा हुई।

इस बार मेले में उत्साह के साथ आशंका भी थी। राजस्थान के लेखक विजयदान देथा और मलयालम के लेखक के० सच्चिदानंद का नाम नोबल पुरस्कार के संभावितों की सूची में होने का उत्साह। ये दोनों ही लेखक आरम्भ से ही इस साहित्योत्सव के साथ जुड़े रहे हैं। और सलमान रुश्दी के आगमन पर हंगामे की आशंका। इस उत्सव का फलक अत्यन्त विस्तृत था। मिथक, धर्म, कला, स्थापत्य, संगीत, बागवानी क्या नहीं था। हिन्दी में बदलाव पर सत्र था। जेल से हाल ही में रिहा हुए लेखकों ने अपने अनुभव सुनाए। टॉम स्टॉपर्ड और डेविड हेयर जैसे प्रसिद्ध नाटककारों ने गिरीश कर्नाड और असगर वजाहत के साथ नाटक/मंचन पर चर्चा की। ऐनी प्रालश, बैन ओकरी, किरन नागरवाला, लायनल थिलर और माइकेल ओंदात्से जैसे उपन्यासकार उत्सव का प्रबल आकर्षण थे।

भारतीय भाषाओं में कश्मीरी, असमिया, बांग्ला, उड़िया, मराठी, तमिल, मलयालम और राजस्थानी के सत्र थे। एक समय में चार सत्र होते हैं, पाँचवाँ होता है युवाओं की कार्यशाला। सहभागिता के लिए सत्र का चयन अत्यन्त दुष्कर है। लेखक तकनीकी विषय और राजनीति में से किसे चुने? जितने मोती समेट सकते हो समेट लो, बाकी अगले वर्ष।

मध्यपूर्व अरब देशों में हुई जनक्रान्ति पर चर्चा करने वाले वहाँ के लेखक स्वयं उपस्थित थे। मैक्स रोडेन बैक की धाराप्रवाह अरबी भाषा। कामिन मोहम्मदी और करीमा खलील के बीच संवाद, तहरीर चौक पर घटी ऐतिहासिक घटनाओं/करवटों पर आधारित था। कश्मीर में क्या हो रहा है? अंजुम जमरूद हजीब, सिद्धार्थ गिग्गू, साहिल मकबूल और इफ्तिखार गिलानी ने बयान किया। पाकिस्तान पर चर्चा की फातिमा भुट्टो, आयशा जलाल और करन थापर ने। नाईजीरियाई लेखक बेन ओकरी और चंद्रहास चौधरी के बीच वार्तालाप में अफ्रीका का दर्द उभरा। ताई सैलासी, तेजू कोल और शबनम खान ने सुदूर अफ्रीका को जयपुर में ला खड़ा किया। शबनम खान पढ़ रही थीं और पौला ओलोशाराक (अर्जेनटाइना) की आँखें रिस रहीं थीं। दो औरतें-दर्द एक। सृजन, सेंसरशिप और असहमति पर तमिलभाषी चेरन, मलयालम में चारू निवेदता ने बात की। लेखन के कारण चेरन श्रीलंका से निर्वासित हैं और चारू अपने दांत तुड़वा बैठे हैं। बामा फौस्तीना के अनुभव भी यही हैं। शोमा चौधरी ने वह प्रश्न उठाया जो कई लेखकों के मन में कुलबुला रहा था।

अर्धसत्य, कुछ अनकही कहानियों, माओवादी गुरिल्लों और भारतीय गणराज्य पर बहस की राहुल पंडिना (बस्तर पर प्रामाणिक लेखन) और नीलाभ अश्क ने। लेखन और असहमति/विरोध पर एरियल डॉफमैन, थांट मिंट यू (म्यांमार) और इफ्तिखार गिलानी बोल रहे थे। थांट ने स्पष्ट कहा—हमें आर्थिक विकास और उद्योग-धन्धों के लिये चीन की सहायता की आवश्यकता है, लेकिन अपनी शर्तों पर। क्या यह सम्भव है? इसी सत्र में जेलिंग यान (चीन) ने कहा—चीनी संस्कृति को समझना असम्भव है।

'टोबा टेकसिंह' और 'रावी पार' पंजाबी भाषा के सत्र थे। विभाजन का दंश वे भी नहीं भूलते और हम भी नहीं। साझा दुख-दर्द हमारी साझी विरासत है। आमार बांग्ला में अनिता अग्निहोत्री और राधा चक्रवर्ती ने बांग्लादेश से आए फकरुल आलम से बात की। उड़िया सत्र में प्रतिभा राय उपस्थित थीं। उनकी लेखनी उपेक्षित पात्रों को उठाती हैं। गाँधी, अम्बेडकर और जंतर-मंतर (जोसेफ लेलीवैल्ड, सुनील खिलनानी, एम०जे० अकबर) सामयिक उथल-पुथल और चर्चा का सत्र रहा। प्रेम कहानियाँ (पवन वर्मा, नमिता गोखले, प्रसून जोशी) और डिकेन्स के स्त्री पात्र (मिरियम, नीलम सरन गौर) और अन्य कई सत्र विशुद्ध साहित्यिक सत्र रहे। इन सत्रों में कहानियाँ, उपन्यास अंश और कविताएँ पढ़ी गईं। लेखन, नाटक और मंच के तकनीकी पक्ष (क्राफ्ट) पर बोले डेविड हैयर, गिरीश कर्नाड, सिनेमा पर गोविंद निहलानी और इला अरुण, कहानी पर जावेद अख्तर, विशाल भारद्वाज, प्रसून जोशी और गुलजार।

समानान्तर हो रहे चार सत्रों में कोई एक साथ उपस्थित नहीं हो सकता। पूरे उत्सव की चर्चा असम्भव नहीं तो दुष्कर/कठिन अवश्य है। अपनी रुचि के अनुसार एक सत्र चुन कर बैठने के अलावा कोई चारा नहीं था।

गम्भीर श्रोता मनपसन्द लेखकों को सुनने जाते हैं। सबसे सुखद थी युवाओं की उपस्थिति! स्कूल, कॉलेज के छात्र। इनके पास रोचक प्रश्नों की सूची थी। ये हर समय, हर जगह रास्ता रोक, लेखकों से प्रश्न करते थे और उत्तर लिखते जाते थे। नई पीढ़ी में साहित्य के प्रति संवेदना जगा रहा है यह उत्सव। किसी भी भाषा, विषय और तकनीक का कोई सत्र ऐसा नहीं था जिसमें पंडाल खाली पड़ा हो। अपना-अपना चयन था। कुछ ओप्रा पर निसार थे तो कुछ फातिमा भुट्टो से जिरह कर रहे थे। ऐमी चुआ भी अत्यन्त लोकप्रिय रहीं। दोनों सत्र समानान्तर थे। पाकिस्तान पर सत्र में तिल रखने की जगह न थी।

यहाँ के वातावरण और अंग्रेजी बाहुल्य पर भी अनेक आपत्तियाँ हैं। लाख टके का प्रश्न है—हिन्दी में ऐसा समारोह करने पर क्या प्रतिबन्ध है?

और अन्तत: इस उत्सव में सर्व प्रतीक्षित किन्तु विवादित लेखक सलमान रूश्दी की भागीदारी को सत्ता-शीर्ष द्वारा प्रतिबन्धित कर दिया गया, यहाँ तक कि उनकी वीडियो-कान्फ्रेंसिंग को भी निषिद्ध किया गया। प्रतिरोधस्वरूप कुछ लेखकों ने रूशदी की रचनाओं के कुछ अंशों का पाठ किया और जावेद अख्तर ने मुखर होकर इस रचनात्मक विरोध को स्वर दिया। किन्तु लेखकों का संगठित-विरोध-स्वर न सुनायी पड़ा और यह निर्णायक-क्षण भी बीत गया। फिर भी इस उत्सव की उपलब्धि थी इस सदी की प्रबुद्ध संवेदनशील युवा पीढ़ी की भागीदारी। उनके प्रश्न, जिज्ञासाएँ, शंकाएँ भारतीय सन्दर्भ में वैश्वक-साहित्य और साहित्यकारों का नव-मूल्यांकन करते प्रतीत हो रहे थे।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

ÌèÙ ãÁ¤Ú ß» È¤Å × çßà¤Ü à¤M¤×

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

तत्त्वजिज्ञासा

महामहोपाध्याय पद्मविभूषण डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

प्रस्तुत ग्रन्थ जिज्ञासुगण की जिज्ञासा तथा उसका समाधान रूप है। अगम पथ पर अग्रसर हो रहे साधक के अन्तरतम में अनेक जिज्ञासा का उदय होना स्वाभाविक है। जिज्ञासु सत्-तर्क का आश्रय लेकर श्रद्धापूर्ण हृदय से पूर्ण विश्वास के साथ नतशिर होकर प्रातिभ प्रत्यक्ष ज्ञानसम्पन्न महापुरुष के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत करता है। यही 'तत्त्वजिज्ञासा' की तथा समाधान के उपक्रम की रूपरेखा है।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 100

सजिल्द : 978-81-7124-770-7 • रु० 150.00
अजिल्द : 978-81-7124-771-4 • रु० 90.00

(*पुस्तक के एक अध्याय का अंश*)

हृदयराज्य (दहर विद्या), कालनाश

एक जिज्ञासु—शक्ति का जागरण कैसे होता है ?

उत्तर—कुण्डलिनी जागती है। सुषुम्ना के ऊर्ध्वमुख होने पर शक्ति का जागरण होता है। गुरुकृपा से होता है। प्रवचन से नहीं होता। पुस्तक पढ़ने से नहीं होता। गुरुशक्ति से होता है। गुरुशक्ति से कुण्डलिनी जागती है। कुण्डलिनी मूलाधार में है। नीचे है। मूलाधार में दो प्रकार की वायु है। एक है इड़ा, एक है पिंगला। दो धारा अथवा current है। इन दोनों के मध्य सुषुम्ना है। सुषुम्ना सो रही है। उसे जगाना होगा। जब यह गुरुकृपा से जागती है, तब कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठना आरम्भ करती है। मूलाधार से उठते-उठते आज्ञाचक्र में आती है। दोनों नेत्रों के ऊपर सब ज्योतिर्मय हो जाता है। दिव्य नेत्र खुल जाते हैं। तत्पश्चात् सहस्रार में जाती है। वहाँ जाकर बैठ जाती है। वहाँ का कार्य पूर्ण करके भीतर प्रवेश करती है। तब शरीर छोड़कर ब्रह्माण्ड में चली जाती है।

इस शरीर के समान एक विराट् शरीर है—ब्रह्माण्ड। उसमें प्रवेश करती है। उसके भीतर प्रवेश करके भेद करते-करते ब्रह्माण्ड का भी भेदन करती है। ब्रह्माण्ड का भेदन करके शून्य में चली जाती है। एकदम शून्य में। तदनन्तर शून्य का भी भेदन करके महाशून्य में जाती है। उस जगह जाकर उसका भी भेदन करती है। तदनन्तर समग्र विश्व के ऊपर उठ जाती है। इस समय भगवत्-कृपा से एक शक्ति का जागरण होता है। तब शक्ति कहती है, ''चिन्ता न करो। मैं पथ बतलाती हूँ।'' अब रास्ता खुल जाता है। शून्य-महाशून्य का तो भेदन, ब्रह्माण्ड का भेदन सब हो गया। अब एक स्थान आता है। यही है अपना स्थान। शक्ति कहती है, ''इस स्थान को तुम भूल गये थे। यह ऐसी जगह है, जहाँ छोटा-बड़ा सब है। तब भी कुछ नहीं है।'' यह बड़ी अद्‌भुत वस्तु है। यही है आत्मा का स्थान। यहीं बैठ जाओ, भीतर खुल जायेगा। तब समग्र विश्वजगत् है उसकी दृष्टि के सामने। कुण्डलिनी जागने से देव-देवी सबका भेदन हो जाता है। भेद होने से अपने स्वरूप में स्थिति हो जाती है।

एक शक्ति है तुम्हारे भीतर, हमारे भीतर, सबके भीतर। इसके साथ सम्बन्ध हो जाता है। भगवद्‌भक्ति होती है। प्रेम, द्वैत, अद्वैत सबकुछ शक्ति का प्रभाव है। यही है असली बात। हिन्दू हो, मुसलमान हो, क्रिश्चियन हो—सबको ही साधना करनी होगी। सब धर्म में है। तब भी अपने-अपने ढंग से एक ही बात को अपनी-अपनी प्रथा के अनुसार कहते हैं। गुरुकृपा से शक्ति जागती है। अपने प्रयत्न की भी जरूरत है। गुरु चाहिये। यदि सौभाग्य से सद्‌गुरु मिलें, तब उनसे मन्त्र, क्रिया का ज्ञान, भक्ति, प्रेम सब आता है। हजारो-हजार जन्म कट गये हैं, यदि यही शेष जन्म है, तब सब खुल जाता है।

खुल जाने पर महाप्रकाश आ जाता है। आरम्भ हो गया है, चारो ओर आरम्भ हो गया है। अधः, ऊर्ध्व, मध्य, हृदय, सभी खुल गया है। वह सब अब पूर्ण हो गया है। प्रकाश क्रमशः भरता जा रहा है। प्रकाश भरने से ही जगत् तर जायेगा। कालातीत हो जाने पर जो रहेगा, वह अनुकूल-अनुरूप रहेगा। वह भीतर प्रवृष्ट होगा। काल उसका स्पर्श नहीं कर सकेगा। इस प्रकार एक में, दो में होते-होते समग्र विश्व में होगा। तब एक ही महाप्रकाश रहेगा। 'स्वयं भगवान्' रहेंगे। और कोई नहीं रहेगा। यही बात है। इसे समझने का प्रयत्न करो। नयी बात को समझने का प्रयत्न करने पर सहज में ही समझा जा सकता है। अब तक जो कुछ समझा गया है, वह काल में ही समझा गया है। भगवान् कहो, अवतार कहो, त्रिगुण की क्रिया कहो, सभी काल के मध्य रह गया है। काल में ही सब यह है। ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ काल की क्रिया नहीं हो रही हो! ऐसा कोई छिद्र तुम नहीं पाते जहाँ काल न हो! उस वस्तु को पहले बाहर करना होगा। वह वस्तु बाहर हो गयी है! वही है नित्य सोपान। यही है वास्तविक दहर विद्या! उसमें प्रवेश होगा। जिसका जितना अधिकार है, वह उतना ही प्रवेश करेगा। अथच, रहेगा काल में ही। अद्‌भुद् वस्तु! कौन अभी समझ पायेगा? समझ लेने पर शीघ्र ही भीतर प्रवेश कर सकेगा। न सझने पर पड़ा रहेगा। तब तक, जब तक समय न आये। काल के राज्य में सब ठीक ही है। पाप है, पुण्य है, अच्छा-बुरा है। स्वर्ग है, नरक है, गति है, सब है। लेकिन अलग है। चरम में यह सब संकुचित होकर एक परम प्रकाश में ही रह जायेगा। कालराज्य में भी सबकुछ मिला जुला है। काल है, कालातीत है, सब है। जो प्रकृत-लीला हुई है, वह कालराज्य के अन्तर्गत हुई। त्रिगुण में शुद्ध वस्तु नहीं है। शुद्ध वस्तु है हृदय में। हृदय ही है दहर। दहराकाश से भी अधः-ऊर्ध्व सब ओर शक्ति का प्रवाह होता है। वह खुल जाये, तो बस! सबकुछ हो गया। वही है कालराज्य का Counter Part. अधिकारी वहीं जा सकेगा, और वहाँ रह सकेगा। अथच रहेगा कालराज्य में ही। देह काल में रहेगी, साथ ही वहाँ भी रहेगी। भारी आश्चर्य वस्तुयें, ऐसी वस्तु सम्पूर्ण सृष्टि में नहीं है। सृष्टिपूर्णता हेतु यह पथ आरम्भ हुआ है।

सिद्ध मनुष्य हैं। चिरकाल से हैं तथा रहेंगे। काल में भी सिद्ध पुरुष हो सकते हैं, उनमें क्या है? वे तो एक खण्ड वस्तु को ही लेकर सिद्ध हैं। पूर्ण महाप्रकाश में तो सिद्ध नहीं हैं। यदि महाप्रकाश में एक भी सिद्ध होते, उस स्थिति में सभी लोग सिद्ध हो जाते। अतः इस प्रकार से (महाप्रकाश में) एक भी सिद्ध नहीं हैं। इसीलिए दहर विद्या प्रयोजनीय है।

जिज्ञासु—तब इन सब क्रम को पकड़कर होगा, क्रम तो प्रारम्भ से रहेगा?

उत्तर—क्रम क्यों नहीं रहेगा? क्रम है, फिर भी क्रम नहीं है। लक्ष कोटि वर्ष जो नहीं हुआ, वह होने जा रहा है। समझने का प्रयत्न करो। पुराने संस्कारों को लेकर समझने का प्रयत्न करने से इसे नहीं पकड़ सकोगे। जो होने जा रहा है, उसका एक indication, संकेत पाया जा रहा है। उसे समझने का प्रयत्न करना उचित तो है। जो है, वह तो है ही, उसे सब जानते हैं। निर्गुण है, क्रिया है, ज्ञान है, तदनुसार गति होगी, इसे तो सभी जानते हैं। किन्तु वहाँ से महाप्रकाश में प्रवेश करने का पथ ही नहीं है। काल का नाश कर लेना होगा। उसका संकोच करा लेना होगा। काल से बचकर जाओगे कहाँ? जहाँ जाओगे, वह भी तो कालराज्य है।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

सरकारी स्कूल में कलक्टर की बिटिया!

न कभी देखा, न कभी सुना पर यह सच है कि तमिलनाडु के इरोड जिले के पंचायत यूनियन प्राइमरी स्कूल में वहाँ के कलक्टर की 8 वर्षीया बेटी गरीब बच्चों के साथ पढ़ाई कर रही है। दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली गोपिका स्लेट पर अन्य बच्चों के साथ जमीन पर बैठकर लिखना सीख रही है। कलक्टर डॉ० आर० आनंदकुमार ने स्वयं भी अपने बालपन में तमिल माध्यम के सरकारी स्कूल में पढ़ाई की थी। कलक्टर की इस पहल से अन्य सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों में भी अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ाने की प्रेरणा मिल रही है।

अनूठा प्रयोग 'खबर लहरिया'

'खबर लहरिया' उत्तर प्रदेश के बांदा और चित्रकूट जिलों में प्रकाशित होने वाला देश का पहला ग्रामीण अखबार है। इस अखबार को अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्ग की महिलाएँ निकालती हैं। ये महिलाएँ अखबार के लिए खबरों का संकलन, लेखन, सम्पादन के अलावा इसके वितरण का भी काम स्वयं करती हैं। इस अखबार का उद्देश्य उन क्षेत्रों तक पहुँचना है जहाँ पढ़ने और मनोरंजन का कोई साधन नहीं है। यह पत्रकारिता क्षेत्र में पुरुष वर्चस्व के मिथक को भी तोड़ता है।

हाल ही में बिहार के सीतामढ़ी से भी इस अखबार का निकलना शुरू हुआ है। अखबार में विकास के मुद्दों, सरकारी योजनाओं, महिला मुद्दों, ग्रामीण व कस्बों की खबरें व मनोरंजन से जुड़ी सामग्री होती हैं। सीतामढ़ी में 'खबर लहरिया' का आरम्भ 'निरन्तर' नामक संस्था द्वारा किया गया है। अखबार की भाषा बज्जिका है।

भगवद् गीता का पोलिश भाषा में हुआ अनुवाद

कर्म की प्रेरणा देने वाले पवित्र धार्मिक ग्रन्थ भगवद् गीता के रूसी भाषा में अनुवाद पर से प्रतिबन्ध हटाने के लिए हिन्दुओं को जहाँ एक लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी, वहीं कैथोलिक बहुल पोलैंड में इस पवित्र धर्मग्रन्थ का पहली बार पोलिश भाषा में अनुवाद किया गया है।

यह अनुवाद पोलैंड की अन्ना रकिंसका नामक महिला ने किया है। उन्होंने संस्कृत में पी-एच०डी० की है। उन्होंने संस्कृत की बारीकियों को सीखने के लिए करीब 10 वर्ष वाराणसी में बिताए हैं। गीता का पोलिश भाषा में अनुवाद हालांकि पहले से ही मौजूद है, लेकिन यह 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजी से किया गया था। मौजूदा अनुवाद रकिंसका ने संस्कृत से पोलिश भाषा में किया है।

मोबाइल पुस्तकालय

लोगों में पढ़ने की रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से कुंभकोणम के कुछ पुस्तक प्रेमियों ने तंजावुर और चेन्नई जिलों में चल-पुस्तकालय की शुरुआत की है। उद्यमी एवं एमबीए डिग्री प्राप्त जी० मुरुगराज ने 'वल्लालार लाइब्रेरी' की शुरुआत की है। उनके पास चुनिंदा किताबों की सूची है। उनके पास इन्हें जारी करने और वापस लेने की भी व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि मैंने करीब चार माह पहले 'वल्लालार पुस्तकालय' शुरू किया। इस प्रकार के पुस्तकालय को शुरू करने का उद्देश्य लोगों में पढ़ने की रुचि विकसित करना है। ऐसा लगता है कि लोगों में पढ़ाई के प्रति रुचि घट रही है। पुस्तकालय एक वैन में चलाया जाता है और इसे शहर के मन्दिर, कॉलेज और स्कूलों के करीब खड़ा कर दिया जाता है।

भारतीय मूल के दिनेश की किताब शीर्ष 10 में

भारतीय मूल के अमेरिकी द्वारा राष्ट्रपति बराक ओबामा पर लिखी गई किताब को वर्ष 2012 की 'ब्लैक हिस्ट्री नोटिफिकेशन लिस्ट' में शीर्ष 10 में जगह मिली है। 'बराक ओबामा इन हवाई एंड इंडोनेशिया' नामक किताब न्यूयॉर्क में रहने वाले सांस्कृतिक मानव विज्ञानी दिनेश शर्मा ने लिखी है। यह किताब अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन बुकलिस्ट ऑनलाइन द्वारा संकलित की गई है।

'रेडियो आजाद हिन्द' की शुरुआत

भोपाल में पिछले दिनों स्वतन्त्रता संग्राम और स्वराज के मूल्यों को पूर्णत: समर्पित देश के पहले रेडियो 'रेडियो आजाद हिन्द' का पुनरारम्भ हुआ। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसका उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री ने रेडियो के प्रथम प्रसारण में कहा कि आजादी के मतवालों, स्वतन्त्रता के रणबांकुरों और अमर शहीदों की स्मृति को समर्पित इस रेडियो चैनल का सपना पूरा हुआ है। स्वतन्त्रता संग्राम एवं शहीदों की स्मृति को संजोने के लिए प्रारम्भ हुआ 'रेडियो आजाद हिन्द' स्वाधीनता से लेकर स्वराज के मूल्य को समर्पित देश का अपनी तरह का पहला रेडियो चैनल है। नेताजी सुभाष चंद्र बोष द्वारा 70 वर्ष पहले 25 मार्च, 1942 को 'रेडियो आजाद हिन्द' की स्थापना की गई थी। इस दिन की स्मृति में ही उसी दिन रेडियो चैनल का शुभारम्भ किया गया।

संस्कृत बनेगी नासा की भाषा

संस्कृत की गूँज कुछ साल बाद अंतरिक्ष में सुनाई दे सकती है। देवभाषा के वैज्ञानिक पहलू का मुरीद अमेरिका इसे नासा की भाषा बनाने की कसरत में जुटा है। इस प्रोजेक्ट पर भारतीय संस्कृत विद्वानों के इंकार के बाद अमेरिका अपनी नई पीढ़ी को इस भाषा में पारंगत करने में जुट गया है।

संस्कृत ऐसी प्राकृतिक भाषा है, जिसमें सूत्र के रूप में कम्प्यूटर के जरिए कोई भी संदेश कम से कम शब्दों में भेजा जा सकता है। विदेशी उपयोग में अपनी भाषा की मदद देने से विद्वानों के इंकार के बाद इसके वैज्ञानिक पहलू समझते हुए अमेरिका ने वहाँ नर्सरी क्लास से ही बच्चों को संस्कृत की शिक्षा देना शुरू कर दिया है। नासा के 'मिशन संस्कृत' की पुष्टि उसकी वेबसाइट भी करती है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि 20 साल से नासा संस्कृत पर काफी पैसा खर्च कर चुकी है।

अनंत को अनूठी श्रद्धांजलि

भारतीय कॉमिक्स के जनक अनंत पाई को अब आप और करीब से जान पाएँगे। पाई को श्रद्धांजलि देने के लिए अमर चित्र कथा मीडिया उनकी जीवनी लेकर आया है। इसका नाम है 'अनंत पाई-द मास्टर स्टोरीटेलर'। अमर चित्र कथा की सम्पादक रीना पुरी का कहना है कि लोक-कथाओं को हर वर्ग तक पहुँचाने वाले पाई ने न केवल भारत को कॉमिक्स दी बल्कि प्राचीन कहानियों को एक पहचान भी दी। उन्होंने परम्परागत, ऐतिहासिक और साहित्यिक कहानियों को कॉमिक के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का काम किया। पाई की 32 पन्नों की ये जीवनी 11 महीनों में तैयार की गई है।

मेघालय में राष्ट्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन 2012 की तैयारियाँ प्रारम्भ

पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी द्वारा 25 मई 2012 से 27 मई 2012 तक मेघालय की राजधानी शिलांग में राष्ट्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में देश-विदेश के हिन्दी लेखक, साहित्यकार, रचनाकार, हिन्दीसेवी और हिन्दी प्रेमी भाग लेंगे।

इस बार सम्मेलन में डॉ० महाराज कृष्ण जैन की ग्यारहवीं पुण्य तिथि के अवसर पर हिन्दी लेखकों और हिन्दी सेवियों का सम्मान भी किया जायेगा।

"मुझे यह कतई सहन नहीं होगा कि हिन्दुस्तान का एक भी आदमी अपनी मातृभाषा को भूल जाये या इसकी हँसी उड़ाये। इससे शरमाये या उसे ऐसा लगे कि वह अपने अच्छे-से-अच्छे विचार अपनी भाषा में प्रकट नहीं कर सकता। कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतन्त्र नहीं हो सकता जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता है।"

—महात्मा गाँधी

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

नाटक बनती बाल कथाएँ

डॉ० भानुशंकर मेहता

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० भानुशंकर मेहता की प्रतिभा का एक कोण उनके नाटककार और रंगकर्म में निखरता है। इस पुस्तक में उन्होंने कहानियों के नाट्य रूपान्तर प्रस्तुत किये हैं जो आधुनिक रंगमंच की एक नयी उभरती विधा है। बच्चों के लिए यह एक अनुपम भेंट है और रंगमंच के लिए बहुमूल्य उपहार भी है। ये बाल नाटक आसानी से और सफलतापूर्वक मंचस्थ किये जा सकते हैं। बच्चे इसे पढ़ेंगे, खेलेंगे और आनन्दित होंगे।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 148

सजिल्द : 978-81-89498-47-4 • रु० 250.00

अजिल्द : 978-81-89498-48-1 • रु० 120.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

पिगसन बनारस में

[छक्कू जी और नक्कू जी आते हैं]

कोरस : ताक धिना धिन!

[उद्घोष—एक बार काशी में पिगसन आये याने कानपुर के कैप्टन आये।]

छक्कूजी : का॰ हो॰ नक्कूजी, सुना मास्टर साहब के यहाँ कोई गोरा साहब आया है।

नक्कूजी : आवा का रहा—आवा और गवा! तौन मास्टर साहब कल ओकर कथा कहत रहे।

छक्कू : अच्छा! का कहत रहे?

नक्कू : गुरु छक्कूजी, फोगट में सबकुछ सुना चाहो हो—अरे कुछ खरचो, पान-पत्ता का पिरबंध करो तो सुनावें!

छक्कू : अरे दू बीड़ा पान पर गिरह खौल दियो—ल्यौ दू के बदले चार जमाओ—तू भी का कहोगे कि किस रहीस से पाला पड़ा रहा।

[झोले से पान निकालकर खिलाता है, पान जमाकर—]

नक्कू : ऊ साहबवा रहा मिल्टरी का आदमी—लफ्टन! का नाम बताये थे—हाँ—पिगसन—सो बिल्लाइत से एक महीना पहले ही आवा रहा—पहिले तो बम्बई आवा—फिर कानपुर और हुँवाँ से बनारस पहुँचा तौन हिंया एक घरमधकेल चिपकनदास गाइड मिल गया। लो सरउ नाम लेते ही आय गये। आइये चिपकनदास जी—हम लोग लफ्टन साहब की बात कर रहे थे।

चिपकन : अरे ऊ ललमुँहा—फौजी? हमही त ओके घुमावा रहा। तौन दस रुपया दिहिस। रेल से उतरा तो बोला—''हम एक दिन में बनारस देकेगा। कल वापस कानपुर जाना माँगटा!''

चिपकन : हमने कहा ल॰न॰ रजऊ! अरे कहा तो दुइये मिंट में सब देखाइ देई—कहा कि साहब चलो—हम विश्वनाथ गल्ली व गोल्डन टेम्पल, मंकी टेम्पल, औरंगजेब का मास्क, घाट और सारनाथ देखा देंगे—बोला—''गुड-गुड! हम टुमको खुस कर डेगा।''

चिपकन : तौ नक्कूजी महाराज हम लोग कार पर बैइठके चले तो रस्ते भर सरवा कच-कच करता रहा ई का है—उ का है।

नक्कू : अच्छा तो तू का बतायो।

चिपकन : जैसे हम कहे की ई क्वींस कॉलेज है—तो बोला—''क्या यहाँ रानी लोग परता है—कि रानी लोग बनाया है।''

चिपकन : हमने कहा कि ई रानी विक्टोरिया के नाम पर है, तो जानते हैं का कहिस?

छक्कू : का कहिस?

चिपकन : कहे लगा कि—''दूसरा देस का रानी के नाम पर बिल्डिंग काहे को बनाया? हमारा इंग्लैण्ड में तो जर्मनी के राजा-रानी के नाम पर कोई बिल्डिंग नहीं है।''

चिपकन : हमने बताया—हमरे यहाँ यही नियम है—हम लोग बड़े त्यागी हैं। अपने नाम को क्यों बढ़ायें। सब काम दूसरों के लिए करते हैं। अब देखिये ये अस्पताल है, यह भी आपके किंग सलामत के नाम पर है।

पिगसन : गुड-गुड, तभी आप लोग अपना कंट्री हमको दे दिया।

चिपकन : हम भी सेर पर एक पौवा और रख दिये। कहा—देखिये, हम लोगों ने लड़ने के लिए सिपाही भेजे आपके वास्ते—हम लोग तो दूसरों के लिए जीते हैं।

नक्कू : अरे ऊ तो बताओ, ऊ जो कचौड़ी गली में साँड़ मिल गवा रहा!

चिपकन : *(हँसकर)* हाँ, थाने पर बोला—''हम कार यहाँ पार्क करेगा, ड्रिंक करेगा।''

चिपकन : हम कहा चलो—

पिगसन : दुकानें बंद क्यों हैं?

चिपकन : हमने कहा—दंगा होने के डर से!

पिगसन : दंगा—कैसा दंगा?

चिपकन : इतने में एक साँड़ आकर लफ्टन को उछाल दिहिस। गिरते बचा, बोला—''डोण्ट वरी हम थर्टी फर्स्ट रेजीमेंट का लफ्टन है।''

चिपकन : तब तक एक डबल साँड़ मस्त झूमता आया!

पिगसन : ओह गाइड, ओह नो!!

छक्कू : फिन गड्डो दिहिस का॰?

चिपकन : नाही। हम कहे डर का बात नाहीं। बनारस का साँड़ मस्त होता है, कोई को नुकसान नाही करता। जानत है सर अभी हम लोग सारनाथ जायेगा वहाँ बुद्ध भगवान—न्यू अहिंसा धर्म चलाया—इसी से काशी में साँड़ भी आज तक बौद्ध धर्म का पालन करते हैं।

पिगसन : वेल! वेल! धर्म का बहुत प्रभाव है—तब हिन्दू-मुसलमान काहे लड़ता—का बुद्ध का इफैक्ट खाली साँड़ पर पड़ा?

नक्कू : बिसनाथ मंदिल भी तो ले गये रहे?

चिपकन : हाँ काहे नाहीं! वहाँ नंदी देखा तो हमने बता दिया—सर यही असली बैल है। ज्ञानवापी का दरसन कराया तो बोला—

पिगसन : वेल, तुम्हारा गॉड तो बहुत डरपोक है कुआँ में कूद गया।

चिपकन : हम तुरंत कहे नो सर—बहुत मर्सीफुल, दयालु—अगर गुस्से से देख लेते तो सहर भसम हो जाता, सहर काहे/जग भसम हो जाता, फिर जिदियाय गया—

— *प्राप्ति स्थान* —

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

अंगऋषि आनंद शंकर माधवन स्मृति सम्मान

अंगिका जाह्नवी संस्कृति संस्थान, पटना द्वारा विगत माह में आयोजित एक समारोह में प्रख्यात कवि-समालोचक एवं 'नई धारा' के सम्पादक डॉ० शिवनारायण को उनकी साहित्य-साधना के लिए तृतीय 'अंगऋषि आनंद शंकर माधवन स्मृति सम्मान' से विभूषित किया गया। संस्थान के महानिदेशक प्रो० उत्तम कुमार सिंह ने डॉ० शिवनारायण को सम्मानस्वरूप शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिह्न, सम्मान पत्र साहित पाँच हजार रुपए की राशि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ० शिवनारायण ने हिन्दी के साथ-साथ अपनी मातृभाषा अंगिका में भी प्रचुर लेखनकर्म किया है।

विश्वनाथ त्रिपाठी, बद्री नारायण को शमशेर सम्मान

वर्ष 2011 का शमशेर सम्मान, सृजनात्मक गद्य के लिए वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी तथा कविता के लिए बद्री नारायण को दिया गया है। सम्मान समारोह आगामी जून में नई दिल्ली में होगा।

मध्य प्रदेश साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कारों की घोषणा

मध्य प्रदेश साहित्य अकादेमी और संस्कृति परिषद द्वारा वर्ष 2009 का माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार कृष्णदत्त पालीवाल को 'सृजन का अंतर्पाठ' (निबन्ध) के लिए, मुक्तिबोध पुरस्कार डॉ० मधु धवन को 'इंटरनेट का माउस' के लिए, वीरसिंह देव पुरस्कार विजय को 'मुक्तिबोध' (उपन्यास) के लिए और भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार डॉ० राजेन्द्र मिश्र को 'युयुत्सु' (कविता) के लिए दिया जायेगा।

स्वयं प्रकाश को भवभूति अलंकरण

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार और प्रगतिशील लेखक संघ की मुख पत्रिका 'वसुधा' के सम्पादक स्वयं प्रकाश को मध्य प्रदेश साहित्य सम्मेलन का प्रतिष्ठित भवभूति अलंकरण प्रदान किया गया है। समग्र अवदान के लिए प्रतिवर्ष देश के किसी वरिष्ठ लेखक को यह सम्मान दिया जाता है। भवभूति अलंकरण के साथ मध्य प्रदेश के दो लेखकों को वागीश्वरी अलंकरण भी दिये जाते हैं। इस वर्ष कहानी कृति के लिए स्वाति तिवारी को तथा आलोचना के लिए महेन्द्र सिंह को यह अलंकरण दिये गये हैं।

'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' 2012

प्रभु श्री श्रीनाथजी के पाटोत्सव (फाल्गुन कृष्ण सप्तमी) के शुभ अवसर पर 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-2012' इलाहाबाद के प्रख्यात हिन्दी विज्ञान लेखक, सम्पादक, अनुवादक एवं 'विज्ञान परिषद' के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपाल मिश्र को 15 फरवरी-2012 को श्रीनाथ द्वारा में 'साहित्य मण्डल' द्वारा आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप अभिनन्दन एवं सम्मान पत्र सहित ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट की गई। इसी क्रम में श्री भवानी शंकर गर्ग को गणेश वल्लभ राठी स्मृति सम्मान प्रदान किया गया एवं समारोह के विभिन्न सत्रों में अतिथियों का सम्मान किया गया।

प्रो० पी० माणिक्यांबा सम्मानित

प्रो० पी० माणिक्यांबा को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली ने वर्ष 2006 के लिए उत्तम अनुवाद पुरस्कार के लिए चयनित किया है। माणिक्यांबा को उनकी अनूदित कृति 'जलगीत' के लिए 1 लाख रुपये की राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 'जलगीत' प्रसिद्ध कवि एन० गोपि द्वारा रचित तेलुगु काव्य 'जलगीतम्' का हिन्दी में अनुवाद है।

डॉ० अहिल्या मिश्र सम्मानित

साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रदान किया जाने वाला 'कादम्बरी' 2011 का सम्मान देश की सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ० अहिल्या मिश्र को जबलपुर (मध्य प्रदेश) में प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ० अहिल्या मिश्र 'पुष्पक' साहित्यिक पत्रिका की प्रधान सम्पादिका हैं।

राजेन्द्र शंकर भट्ट सम्मानित

राजस्थान के राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल ने वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र शंकर भट्ट को जयपुर में विगत 16 फरवरी को 'पत्रकारिता के क्षेत्र में अमूल्य योगदान' के लिए 'लोकमत' समाचार समूह का 'अशोक गहलोत लोकमत मित्रता पुरस्कार' प्रदान किया। पुरस्कार में स्मृति चिह्न, शॉल तथा इक्कीस हजार रुपये प्रदान किये गये। दस दिन बाद, 26 फरवरी को उदयपुर में श्री भट्ट को इतिहास के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों के सम्मान में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन का 'महाराणा कुंभा सम्मान-2012' प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप रजत तोरण, शॉल, प्रशस्ति पत्र के साथ पच्चीस हजार एक रुपये प्रदान किये गये।

और गौरवान्वित हो गया ज्ञानपीठ

शरीर से वृद्ध लेकिन मन से युवा। 86 वर्षीय लेखक अमरकांत और उनके हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए उन्हें 45वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। इलाहाबाद संग्रहालय के ऑडिटोरियम में विगत 13 मार्च को भव्य समारोह में अमरकांत को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र व पाँच लाख रुपये का चेक देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ० नामवर सिंह ने अमरकांत को अपना बड़ा भाई बताते हुए कहा कि यह न सिर्फ हिन्दी बल्कि हर भारतीय भाषाओं के लिए ऐतिहासिक क्षण है। पहली बार ऐसा हुआ है कि ज्ञानपीठ किसी को सम्मानित करने के लिए स्वयं दिल्ली से चलकर इलाहाबाद आया है। अमरकांत ऐसे लेखक हैं जिनके लिए हर पुरस्कार छोटा है।

सम्मान से अभिभूत अमरकांत ने कहा कि यह मेरे लिए हर्ष का क्षण है। स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ लेकिन चुनौती बढ़ गई है। मैं चुनौती को स्वीकार्य करता हूँ, आगे और अच्छा लिखने का प्रयास करूँगा। ज्ञानपीठ के ट्रस्टी आलोक जैन ने कहा कि अमरकांत को सम्मानित कर ज्ञानपीठ गौरवान्वित है। वह न सिर्फ भारत बल्कि विश्व के सक्षम कहानीकारों में हैं। भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक रवीन्द्र कालिया ने अतिथियों का स्वागत किया।

हेमंत फाउंडेशन द्वारा सम्मान

वर्ष 2012 का विजय वर्मा कथा सम्मान नीला प्रसाद को उनके कथा संग्रह 'सातवीं औरत का घर' के लिए तथा हेमंत स्मृति कविता सम्मान रविकांत को उनके कविता संग्रह 'यात्रा' के लिए प्रमुख अतिथि डोगरी की वरिष्ठ साहित्यकार डॉ०

अनुशंसाएँ/प्रविष्टियाँ आमंत्रित

एक प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार, ललित कलाओं के लिए समर्पित 'स्पंदन संस्था, भोपाल' द्वारा विभिन्न विधाओं में सम्मानों की स्थापना की गई है। प्रकाशकों, लेखकों तथा पाठकों से अनुरोध है कि वे जिस कथाकार/कवि/चित्रकार/पत्रकार/प्रवासी कथाकार, निदेशक एवं नृत्यांगना को सम्मान के योग्य पाते हैं उनके नाम की अनुशंसा भेजने का कष्ट करें। लेखक एवं प्रकाशक कृतियों की दो-दो प्रतियाँ भिजवाएँ। अनुशंसाएँ भेजने की अन्तिम तारीख 31 मई, 2012 है।

पूरी जानकारी हेतु सम्पर्क करें—उर्मिला शिरीष (संयोजक : स्पंदन सम्मान), 59-बी, जानकी नगर, चूनाभट्टी, कोलार रोड, भोपाल-462042 (मध्य प्रदेश)

शोध पर पुरस्कार (प्रविष्टि)

हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर की ओर से उसकी स्वर्णजयंती के अवसर पर प्रकाशित शोध-प्रबन्धों पर 'हिन्दी साहित्य निकेतन शोध पुरस्कार' देने की घोषणा की गई है।

इस वर्ष पुरस्कार की राशि 25,000 रुपए होगी। पुरस्कार हेतु पिछले तीन वर्षों में (2009 तथा बाद के) प्रकाशित शोध-प्रबन्ध स्वीकार्य होंगे। समग्र जानकारी के लिए लिखित पते पर सम्पर्क करें। हिन्दी साहित्य निकेतन, 16, साहित्य विहार, बिजनौर (उत्तर प्रदेश)

ßÕâ§Å Ñ www.vvpbooks.com

पद्मा सचदेव के हाथों प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप ग्यारह हजार की धनराशि, शॉल, श्रीफल, पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

पद्मश्री के०पी० सक्सेना को शरद जोशी सम्मान

वरिष्ठ व्यंग्यकार और लगान, स्वदेश, जोधा अकबर जैसी फिल्मों के संवाद लेखक पद्मश्री के०पी० सक्सेना को राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान के लिए चुना गया है। वर्ष 2008-09 के लिए यह सम्मान मध्य प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उन्हें एक भव्य समारोह में प्रदान किया।

व्यास सम्मान

के०के० बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला व्यास सम्मान-2011 वरिष्ठ रचनाकार राम दरश मिश्र को उनके काव्य संग्रह 'आम के पत्ते' के लिए दिया जायेगा। फाउंडेशन द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गयी है। प्रो० मिश्र के 16 काव्य संग्रह, 13 उपन्यास और आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि विधाओं में कई रचनाएँ प्रकाशित हैं। व्यास सम्मान के अन्तर्गत ढाई लाख रुपये की नकद राशि प्रदान की जाती है।

कलाम और संतोष हेगड़े को जिंदल पुरस्कार

पूर्व राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम एवं कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त संतोष हेगड़े सहित 27 लोगों को विभिन्न क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 23 फरवरी को एस०आर० जिंदल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार स्वरूप सभी को **एक-एक करोड़ रुपए** की नकद राशि और प्रशस्ति पत्र दिए जाएंगे। सीताराम जिंदल फाउंडेशन के संरक्षक एवं जिंदल एल्युमिनियम के सी०एम०डी० डॉ० सीताराम जिंदल ने कहा कि इस पुरस्कार की स्थापना का उद्देश्य लोगों को देश और समाज के उत्थान के लिए काम करने को प्रोत्साहित करना है। डॉक्टर कलाम को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए तथा कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति संतोष हेगड़े को सामाजिक क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2011 के एस० आर० जिंदल पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। न्यायमूर्ति हेगड़े ने कर्नाटक के लोकायुक्त के पद पर रहते हुए भूमि अधिग्रहण के मामलों में भ्रष्टाचार का खुलासा किया और उन्हें सजा दिलाने में कामयाब भी हुए।

अमर्त्य सेन अमेरिका में हुए सम्मानित

नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन को अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने नेशनल मेडल फॉर आर्ट्स एण्ड ह्यूमैनिटिज अवार्ड से सम्मानित किया है। व्हाइट हाउस में आयोजित एक भव्य समारोह में ओबामा ने सेन को यह पुरस्कार प्रदान किया। उन्हें यह पुरस्कार भूख और गरीबी से लड़ने की समझ विकसित करने के लिए दिया गया है। पुरस्कार प्रदान करने से पहले ओबामा ने कहा, ''हमारे बीच एक अर्थशास्त्री भी हैं, जो अक्सर हमारे साथ मंच पर नहीं होते हैं।'' अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, ''सेन को गरीबी, अकाल और अन्याय के सम्बन्ध में उनकी दूरदृष्टि के लिए यह सम्मान दिया गया है।''

गोपीचंद नारग और गुलाब कोठारी को मूर्तिदेवी पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा उर्दू के नामचीन लेखक प्रोफेसर गोपीचंद को 'उर्दू गजल और हिन्दुस्तानी जेहन व तहजीब' के लिए वर्ष 2010 और डॉक्टर गुलाब को 'मैं ही राधा, मैं ही कृष्ण' के लिए वर्ष 2011 के प्रतिष्ठित मूर्तिदेवी सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।

ज्ञानपीठ के निदेशक रवीन्द्र कालिया ने बताया कि नारंग की किताब में भारतीय दर्शन, साहित्य, परम्परा और संस्कृति को दर्शाया गया है। इस किताब में दिल्ली और लखनवी गजल के बारे में लिखा गया है। नारंग ने इसमें अहम गजलकारों की गजलों की समीक्षा की है। गुलाब कोठारी ने अपनी किताब में आध्यात्मिकता की गहराई से व्याख्या की है। उनकी किताब में बताया गया है कि कृष्ण के महत्त्व को समझने के लिए राधा को समझना बेहद जरूरी है।

मूर्तिदेवी पुरस्कार के अन्तर्गत दो लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र, शॉल और वाग्देवी की प्रतिमा प्रदान की जाती है। पहला मूर्तिदेवी पुरस्कार 1983 में कन्नड़ विद्वान सी०के० नागराज राव को उनकी रचना 'पट्टमहादेवी शान्तला' के लिए प्रदान किया गया था।

शुभदा पाण्डेय महिला रत्न से सम्मानित

सिलचर, आसाम की प्रमुख साहित्यकार शुभदा पाण्डेय को दिल्ली की संस्था विश्वामित्र परिवार ने 12 मार्च को श्री राम सेन्टर, मण्डी हाउस, दिल्ली में उनके शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अवदान के लिए महिला रत्न सम्मान से विभूषित किया।

राजस्थान साहित्य अकादमी का अमृत सम्मान

यशस्वी लेखक और वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० भवानीलाल भारतीय को राजस्थान साहित्य अकादमी का अमृत सम्मान विगत 28 जनवरी को प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के मुख्य आतिथ्य में आयोजित सम्मान कार्यक्रम में राज्य के अन्य साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया। प्रत्येक साहित्यकार को शॉल और प्रशस्तिपत्र के साथ रु० 11000/- की राशि प्रदान करते हुए अकादमी के अध्यक्ष श्री वेद व्यास ने साहित्यकारों का अभिनन्दन किया और साहित्य तथा काव्य को लोकोन्मुख बनाने पर जोर दिया। सम्मान कार्यक्रम में उदयपुर, जयपुर तथा कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति भी उपस्थित थे।

तमिल लेखक डॉ० मनवालन को सरस्वती सम्मान

विगत 22 मार्च को के०के० बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार तमिल के वरिष्ठ रचनाकार डॉ० ए०ए० मनवालन की 2005 में प्रकाशित कृति 'इरम कथाईयुम ईरमयाकलुयम' (रामकथा और रामायण) को वर्ष 2011 के 21वें सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया है।

यह सम्मान प्रतिवर्ष किसी भारतीय नागरिक की ऐसी उत्कृष्ट साहित्यिक कृति को दिया जाता है जो भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भारतीय भाषा में सम्मान वर्ष से 10 साल पहले की अवधि में प्रकाशित हुई हो। सम्मान के रूप में साढ़े सात लाख रुपये की नकद राशि, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाता है। डॉ० मनवालन की यह कृति पाली, संस्कृत, प्राकृत, तिब्बती, तमिल, तेलुगु, असमिया, मलयालम, बांग्ला, कन्नड़, मराठी, हिन्दी, उड़िया, फारसी, मलय, जापानी, फिलिपीनी, थाई और कश्मीरी में लिखी गयी 48 रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है।

आमि हिन्दी जाने ना

किसी कवि सम्मेलन में एक बंग महिला भी श्रोताओं में थी। काफी देर तक वह सुनती रही, परन्तु हिन्दी कविताएँ उसकी समझ से परे थीं। उससे रहा नहीं गया। खड़ी होकर बंगाली में बोली, ''अध्यक्ष महाराज, एक बंगाली कविता सुनवाइए, क्योंकि आमि हिन्दी जाने ना।'' मंच पर एक आशु कवि विराजमान थे। महिला के कण्ठ की मधुरता से वे गद्‌गद हो गये। उन्होंने कई छन्द सुनाए, जिनमें सबके अन्त में यह पंक्ति आती—'आमि हिन्दी जाने ना'। कुछ पंक्तियों का मुझे (पुरुषोत्तमदास मोदी को) अभी भी स्मरण है—

कूक उठी किस उपवन से कोयल,
बजी कहाँ से मादक बीना।
इन्द्रपुरी से अप्सरा बोली,
आमि हिन्दी जाने ना।

—विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा
प्रकाशित पुस्तक
'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' से

संगोष्ठी/लोकार्पण

काव्यानुवाद की समस्या पर संगोष्ठी

कोलकाता। नलिन मोहन सान्याल के 150वें जन्म वर्ष पर विगत दिनों महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र ने 'काव्यानुवाद की समस्याएँ' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। नलिन मोहन सान्याल हिन्दी के पहले एम०ए० हैं। वे हिन्दी व बांग्ला दोनों भाषाओं के लेखक हैं। उनकी याद में आयोजित गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कवि एवं प्रगतिशील वसुधा के सम्पादक राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि अपने देश में अनुवाद का काम उस तरह होता है जैसे कोई पुरानी फिल्म के गीत को याद कर बाथरूम में गुनगुनाने की कोशिश करता है जबकि इस काम को काफी गम्भीरता से लिया जाना चाहिये। हमारा देश जैसी सांस्कृतिक विभिन्नताओं में जीता है वहाँ अनुवाद नैसर्गिक प्रक्रिया है। साहित्य का अनुवाद टीका या भाष्य नहीं होता। वह सांस्कृतिक प्रक्रिया का अंग होता है।

भोपाल से आये कवि, गद्यकार और अनुवाद के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य कर चुके ओम भारती ने अपने आलेख में कहा कि कविता का अनुवाद किसी अन्य भाषा में हो ही नहीं सकता। वह मूल कविता की व्याख्या, पुनर्व्याख्या होता है। शाब्दिक अर्थ बोध होता है। अनुवादक उसमें अपना आंशिक योगदान करेगा ही, जबकि मूल को मूल रहने देना एक बड़ी चुनौती होती है। बांग्ला साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि अनुवाद मनुष्य को आपस में जोड़ने की सबसे सशक्त सांस्कृतिक प्रक्रिया है। मनुष्य के संवाद की शक्ति अनुवाद से बढ़ती है। शुद्धता पर जोर नहीं होना चाहिये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कवयित्री एवं अनुवादिका डॉ० चंद्रकला पाण्डेय ने कहा कि अनुवाद में एक बड़ी समस्या रचना के सांस्कृतिक सन्दर्भ को ठीक ठीक समझने की होती है। हर रचना का एक सांस्कृतिक सन्दर्भ होता है, उसे समझे बगैर अनूदित रचना को नहीं समझा जा सकता। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र के प्रभारी डॉ० कृपाशंकर चौबे ने किया।

'आज का भारतीय बाल साहित्य' पर चर्चा-गोष्ठी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के एक अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र द्वारा दिल्ली तथा देश के अन्य भागों में बाल साहित्य पर मासिक चर्चा की शृंखला के एक भाग के रूप में 'आज का भारतीय बाल साहित्य' विषय पर भुवनेश्वर के स्टेट रिसोर्स सेंटर फॉर एडल्ट एजुकेशन में एक चर्चा का आयोजन किया गया। प्रख्यात चित्रकार श्री अतनु राय ने कहा कि बाल पुस्तकों में चित्रांकन ऐसे हों जिससे बच्चे आनंदित हो सकें।

इस अवसर पर महत्त्वपूर्ण वक्ताओं में थे—लेखिका श्रीमती दीपा अग्रवाल, श्रीमती मनीषा चौधरी, प्रख्यात बाल लेखक श्री दाश बेनहूर, श्री मानस रंजन सामल, श्री मानस रंजन महापात्र तथा ओड़िया भाषा प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ० हरिहर कानूनगो। श्री सत्यब्रत बारिक ने इस चर्चा-गोष्ठी की अध्यक्षता की।

सिनेमा आधारित कैलेंडर का लोकार्पण

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित वर्ष 2012 के कैलेंडर का लोकार्पण कार्यक्रम इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। कैलेंडर का लोकार्पण प्रख्यात अभिनेता श्री फारूख शेख द्वारा किया गया। यह कैलेंडर साहित्य और सिनेमा पर आधारित है।

अपने सम्बोधन में श्री शेख ने कहा कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं है। वह जीवन का हिस्सा है और दर्शकों को चाहिए कि वह खराब फिल्मों को नकार दें, क्योंकि वे उसके लिए पैसा और समय देते हैं। इस अवसर पर अपने वक्तव्य में ट्रस्ट के निदेशक श्री एम०ए० सिकंदर ने कहा कि 2013 में भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इसी तथ्य के मद्देनजर 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की थीम भी भारतीय सिनेमा पर केन्द्रित है तथा कैलेंडर में भी साहित्य और सिनेमा के रिश्ते को दर्शाते साहित्य आधारित फिल्मों के चित्र सम्मिलित किए गए हैं। विदित हो कि कैलेंडर में ऐसे फिल्मकारों को शामिल किया गया है, जिन्होंने न सिर्फ साहित्यिक कृतियों पर आधारित बेहतरीन फिल्में बनाईं, बल्कि भारतीय सिनेमा को अन्तरराष्ट्रीय वाहवाही भी दिलवाई।

निशा भार्गव की कृतियाँ लोकार्पित

पिछले दिनों राजधानी में चर्चित लेखिका निशा भार्गव की चार कृतियों—'घनचक्कर' (हास्य-व्यंग्य), 'मेरी सरस कविताएँ', 'बसंत बयार' (कहानी-संग्रह) तथा 'तिनके-तिनके' (लघुकथाएँ) का विमोचन सम्पन्न हुआ। हिन्दी साहित्य के व्यक्तित्व—बालस्वरूप राही, शेरजंग गर्ग, अशोक चक्रधर, प्रदीप पंत, मृदुला सिन्हा तथा चंद्रकांता के हाथों लोकार्पित इन पुस्तकों पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया।

पं० श्रीलाल शुक्लजी की स्मृति में संगोष्ठी

हिन्दी के ख्याति प्राप्त ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहीता, प्रसिद्ध उपन्यासकार पद्मभूषण पं० श्रीलाल शुक्ल जी की पुण्य स्मृति में आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, विषय 'हिन्दी साहित्य को श्रीलाल शुक्ल का प्रदेय' एवं 'श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास राग दरबारी का राजनैतिक सन्दर्भ' पुस्तक का लोकार्पण समारोह विगत दिनों हैदराबाद स्थित आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी के सभागार में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ० अमरसिंह वधान ने अपने वक्तव्य में कहा कि श्रीलाल शुक्ल का साहित्य लोक सत्य, साहित्यिक सत्य एवं आध्यात्मिक सत्य का सुन्दर समन्वय है। उनकी कृतियाँ वैश्विक जागरूकता पैदा करके युवाओं को सही एवं सार्थक दिशा प्रदान करती हैं। इस आयोजन में डॉ० राधेश्याम शुक्ल, प्रो० टी० मोहन सिंह, प्रो० ऋषभ देव शर्मा ने श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं पर विचार व्यक्त किये। प्रो० ऋषभदेव शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की

अण्डमान में पं० विद्यानिवास मिश्र पर संगोष्ठी

हिन्दी साहित्य कला परिषद, पोर्टब्लेयर द्वारा दिनांक 03 फरवरी, 2012 को **लोक संस्कृति और पण्डित विद्यानिवस मिश्र** विषय पर एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रोफेसर डॉ० देवेन्द्र शुक्ल ने कहा कि पण्डित विद्या निवास मिश्र के ललित निबन्धों की आधार भूमि लोक संस्कृति ही है। लोक में व्याप्त आचार-विचार, संस्कृति-संस्कार लोकगीत में मौजूद हैं। उन्होंने उन लोकगीतों की आधुनिक व्याख्या के रूप में अधिकांश निबन्ध लिखे हैं जो भारतीयता के संवाहक हैं।

संगोष्ठी में डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी, डॉ० रामकृपाल तिवारी आदि विद्वानों ने अपने वक्तव्यों में डॉ० मिश्र के साहित्य के परिप्रेक्ष्य में उनके लोक-चिंतन को उजागर किया।

पुस्तक विमोचन

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं समाजशास्त्री डॉ० सुभाष शर्मा की पुस्तक 'विकास का समाजशास्त्र' का लोकार्पण विगत दिनों 'हिन्दी भवन' (दिल्ली) में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित श्री राजेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता डॉ० बी०डी० शर्मा ने की।

राष्ट्रीय चेतना के काव्य पर संगोष्ठी

चेन्नई की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था साहित्यानुशीलन समिति ने विगत दिनों राष्ट्रीय चेतना के अमर कवियों पर अनुशीलन-संगोष्ठी का आयोजन किया। नगर के गोपालपुरम स्थित राजेन्द्र बाबू भवन में संयोजित समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध आलोचक एवं अनुवादक डॉ० एन० सुन्दरम ने की। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने कहा कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों ने देश प्रेम का प्रेरक साहित्य समाज को दिया है। इस वर्ष की अनुशीलन संगोष्ठियों में ऐसे राष्ट्रीय साहित्य को ही विवेचन का आधार बनाया गया है। संगोष्ठी में डॉ० एम० शेषन, डॉ० पी० के० बालसुब्रह्मण्यम, डॉ०

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

रवीन्द्रनाथ सिंह, डॉ० निर्मला मौर्य, डॉ० विद्या शर्मा, डॉ० अशोक कुमार द्विवेदी और डॉ० रविता भाटिया ने अपने आलोचनात्मक प्रपत्रों में क्रमश: सुब्रह्मण्य भारती, शिवमंगल सिंह सुमन, सुभद्राकुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और रामधारी सिंह दिनकर के राष्ट्रीय कृतित्व पर प्रकाश डाला।

'दक्खिनी हिन्दी, हिन्दी साहित्य की अभिन्न कड़ी है'

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने 'साहित्य मंच' के अन्तर्गत दक्खिनी हिन्दी पर विशेष व्याख्यान के लिए हिन्दी के ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ० परमानंद पांचाल को आमन्त्रित किया गया। डॉ० पांचाल ने हिन्दी भाषा और साहित्य के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दक्खिनी हिन्दी, हिन्दी साहित्य के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिसके अध्ययन के बिना समग्र हिन्दी साहित्य का अनुशीलन और परिशीलन अधूरा है।

डॉ० पांचाल ने उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि दक्खिनी, वास्तव में हिन्दी का वह पूर्व-रूप है जिसका विकास दक्षिण भारत के मुस्लिम सुलतानों के राज्यों में 13वीं से 18वीं शती में हुआ था। अमीर खुसरो (1253-1325) साहित्य में जिस खड़ी बोली हिन्दवी का प्रयोग कर रहे थे, उसका विकास कतिपय ऐतिहासिक कारणों से उत्तर में न होकर दक्षिणी प्रदेशों में 'दक्खिनी' के रूप में हुआ था। खड़ी बोली को साहित्य में ऊँगली पकड़कर चलना सिखाने वाले ये दक्षिणात्य ही थे। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के एक कथन को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि खड़ी बोली हिन्दी के सर्वप्रथम कवि ये दक्खिनी के कवि ही थे।

'लोकार्पण-परम्परा पर अनुसंधान की आवश्यकता'—नामवर सिंह

हिन्दी का कोई भी रचनाकार उपेक्षित न हो जाये इसके लिए आवश्यक है कि साहित्यिक संस्थाएँ आगे बढ़कर अपनी सक्रिय भूमिका अदा करें। यह बात विख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने वरिष्ठ कवि एवं लेखक उद्भ्रान्त की तीन नई पुस्तकों, 'सृजन की भूमि' (संस्मरणात्मक निबन्ध), 'आलोचना का वाचिक' (वाचिक आलोचना) तथा 'ब्लैकहोल' (काव्य नाटक) तथा कवि उद्भ्रान्त के चर्चित महाकाव्य 'त्रेता' पर दलित दृष्टि से लिखे गये प्रसिद्ध दलित चिंतक कंवल भारती के आलोचना ग्रन्थ 'त्रेता-विमर्श और दलित-चिंतन' का लोकार्पण करते हुए कही।

इसी अवसर पर विगत 22 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में 'लोकार्पण की भूमिका और मिथकीय काव्य और नाटक का दलित विमर्श' विषय पर अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री सिंह ने कहा कि लोकार्पण और उसकी परम्परा पर आज अनुसंधान आवश्यक लगता है, और इस पर विश्वविद्यालयों में शोध होना चाहिए। कार्यक्रम को प्रो० डॉ० बली सिंह, डॉ० हेमलता महीश्वर, प्रो० अभय मौर्य, डॉ० हेमंत जोशी, सुश्री रमणिका गुप्ता, डॉ० कर्णसिंह चौहान ने भी सम्बोधित किया।

'कविता का भविष्य और भविष्य की कविता' विषय पर अण्डमान में राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी साहित्य कला परिषद, पोर्ट ब्लेयर की स्वर्णजयंती के अवसर पर दिनांक 12 मार्च, 2012 को 'कविता का भविष्य और भविष्य की कविता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें देश के विभिन्न भागों से पधारे साहित्यकारों, विद्वानों के साथ ही स्थानीय साहित्यविदों ने उपर्युक्त विषय पर काफी विचार मंथन किया। गोष्ठी का शुभारंभ करते हुए हिन्दी साहित्य कला परिषद के साहित्य सचिव डॉ० व्यास मणि त्रिपाठी ने कहा कि दिशाहीन उपभोक्तावाद और बाजारवाद के कारण संवेदनशीलता क्षरित हो रही है, इसके कारण कविता पर ही नहीं शब्द की सत्ता पर भी संकट उत्पन्न हो गया है। उन्होंने कहा कि साहित्य धीरे-धीरे हाशिये पर खिसकता जा रहा है, जो चिन्ता का विषय है।

दिल्ली से पधारे श्री विष्णु नागर ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि कविता दुनिया की वैकल्पिक तस्वीर पेश करती है। उन्होंने आरोप लगाया कि अधिकांश प्रचार तंत्र पूजीवादी व्यवस्था के पोषक हैं इसीलिए सस्ते और बाजारू साहित्य को अधिक प्रचार मिलता है। डॉ० मनमोहन, हरियाणा; डॉ० विवेक गौतम, दिल्ली; डॉ० शुभा, रोहतक; श्री ऋतुराज, जयपुर; डॉ० रामकृपाल तिवारी, पोर्ट ब्लेयर ने गोष्ठी के विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये।

पं० विद्यानिवास मिश्र को समर्पित की संस्कृत रचनाएँ

पं० विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर विद्याश्री न्यास की ओर से संस्कृत काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें डॉ० विजय कुमार पाण्डेय, डॉ० पवन कुमार शास्त्री, डॉ० हरिप्रसाद अधिकारी, डॉ० कमला पाण्डेय, डॉ० धर्मदत्त चतुर्वेदी, डॉ० उपेन्द्र पाण्डेय, पं० सदाशिव द्विवेदी ने संस्कृत की रचनाएँ सुनायीं। पं० रेवा प्रसाद द्विवेदी मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता पं० शिवजी उपाध्याय, संचालन डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय व धन्यवाद ज्ञापन न्यास के सचिव डॉ० दयानिधि मिश्र ने किया।

यथार्थ गीता के उर्दू संस्करण का विमोचन

विगत 19 मार्च को जामिया उर्दू कैंपस में भारतीय संस्कृति सुरक्षा व मानव कल्याण समिति (ट्रस्ट) और जामिया उर्दू की ओर से आयोजित संगोष्ठी में स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज रचित 'यथार्थ गीता' के उर्दू संस्करण का विमोचन स्वामी बज्रानंद, सफदर एच० खान व प्रो० हुमायूं मुराद ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रो० रजाउल्लाह खाँ के कुरान के पाठ एवं राहुल गुप्ता के 'यथार्थ गीता' के पाठ से हुआ। ट्रस्ट के अध्यक्ष स्वामी बज्रानंद ने कहा कि अगर भ्रम की स्थिति को दूर कर लिया जाये तो चाहकर भी मनुष्यों के बीच में विघटन नहीं हो सकता।

'प्रेम सम्बन्धों की कहानियाँ' का लोकार्पण

'विश्व पुस्तक मेला' नई दिल्ली में चर्चित लेखिका संतोष श्रीवास्तव के सद्य प्रकाशित कथा संग्रह 'प्रेम सम्बन्धों की कहानियाँ' का लोकार्पण वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० रामदरश मिश्र के हाथों सम्पन्न हुआ। डॉ० रामदरश मिश्र ने लेखिका को बधाई देते हुए कहा कि वे लगातार मानवीय मूल्यों पर लिख रही हैं जो कि उनके प्रौढ़ लेखन का प्रतीक है।

60 की उम्र में युवा है 'नवनीत'

''आदमियों में भले ही 60 साल की उम्र वृद्धावस्था कही जाती है, पर कृतियों की उम्र तो हजारों सालों में गिनी जाती है। इस लिहाज से 60 साल की उम्र में 'नवनीत' तो युवा हुआ है।'' यह उद्‌गार हैं जाने-माने कवि एवं फिल्मकार श्री गुलजार के, जो भारतीय विद्या भवन की गौरवशाली मासिक 'नवनीत' के हीरक जयंती समारोह में अध्यक्ष के रूप में बोल रहे थे। कार्यक्रम में बीज वक्तव्य देते हुए मुंबई उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा कि, ''नवनीत केवल एक पत्रिका नहीं, भारतीय विद्या भवन का सांस्कृतिक आन्दोलन है।''

भारतीय विद्या भवन के कार्यकारी सचिव एवं निदेशक श्री होमी दस्तूर ने 'भवन' के संस्थापक कुलपति के०एम० मुंशी जी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए 'भवन' की प्रतिबद्धताओं को रेखांकित किया। 'नवनीत' के सम्पादक श्री विश्वनाथ सचदेव ने पत्रिका के 60 साल के सफर का संक्षेप में वर्णन करते हुए इसे सांस्कृतिक पत्रकारिता बताया।

> ''मातृभाषाहीन जाति, जाति नहीं कही जा सकती। मातृभाषा की रक्षा देश की सीमा की रक्षा से भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि यह पर्वत और नदी से भी अधिक बलवती है।''
>
> **—प्रख्यात विद्वान टॉमस डेविस**

पुस्तक परिचय

अट्ठारहवीं शताब्दी के राजस्थानी चित्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कृति का अध्ययन

डॉ० ज्योतिमा

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 272 + 40 पृष्ठ रंगीन चित्र (आर्ट पेपर) + 12 पृष्ठ श्वेत श्याम चित्र (आर्ट पेपर)

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-849-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत ग्रंथ में अट्ठारहवीं शताब्दी के राजस्थानी चित्रों में संस्कृति का गहन अध्ययन है। भारतीय चित्रकला के परिदृश्य में राजस्थानी चित्रकला का अपना निजस्व है। यह पुस्तक हमें दो स्तरों पर स्थापित करती है। पहले तो इसके द्वारा 18वीं शताब्दी का कालबोध होता है, दूसरी ओर इसकी व्यापकता राजस्थानी चित्रों के द्वारा निर्धारित होती है। स्वयं संस्कृति विशाल व्याप्ति वाला शब्द है जो हमारे जीवन को एक छोर से दूसरे छोर तक अवेष्ठित करता है। चित्रकला के माध्यम से उस संस्कृति का तत्कालीन स्वरूप क्या था इसे प्रत्यक्ष रूप से इस पुस्तक में देख सकते हैं क्योंकि इस समय के राजस्थानी चित्र इस क्षेत्र के दस्तावेज की तरह हैं।

पुस्तक में राजस्थान का राजनैतिक इतिहास, संस्कृति, राजस्थानी चित्रकला का विकास और राजस्थान में विकसित विभिन्न शैलियाँ— मेवाड़, बून्दी, कोटा, बीकानेर, किशनगढ़, जोधपुर, जयपुर को समाहित किया गया है। साथ ही रागमाला, नायिका भेद, ढोलामारू, रामायण, भागवत, पुराण, कृष्णलीला, रसमंजरी, गीत-गोविन्द, बारहमासा, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई, भ्रमरगीत जैसे प्रमुख विषयों के अतिरिक्त राजदरबार, आखेट, त्यौहार, स्त्री सौन्दर्य, शबीह, जुलूस तथा अन्त:पुर के दृश्य के माध्यम से राजस्थान में व्याप्त तत्कालीन संस्कृति को दिखाने का प्रयास किया गया है।

राजस्थानी शैलियों में तत्कालीन हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों का घनिष्ठ गंगा-जमुनी रूप मिलता है। यहाँ की अनेक शैलियों में मुस्लिम चित्रकारों का बोलबाला था परन्तु जिस प्रकार रसखान आदि कवियों ने हिन्दू-पौराणिक बिम्बों को आत्मसात् किया था उसी प्रकार मुस्लिम भाइयों ने भी। इस विषय पर भी पुस्तक में चर्चा की गयी है।

हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास

प्रो० वशिष्ठ अनूप

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 344

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-865-0

अजि. : रु० 190.00 ISBN : 978-81-7124-866-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस गतिशील सृष्टि में कुछ भी अपरिवर्तनीय नहीं है। हर चीज़ तेजी के साथ बदल रही है। जैसे-जैसे समय बढ़ रहा है, नये-नये अनुसन्धानों, तथ्यों और साक्ष्यों के प्रकाश में साहित्य की भी नयी व्याख्या हो रही है। पुरानी मान्यताएँ कहीं बदल और विस्थापित हो रही हैं तो कहीं नये प्रमाणों से और पुष्ट भी हो रही हैं। आज का समाज जितनी तीव्र गति से बढ़ और बदल रहा है, साहित्य भी उससे कदम मिलाकर चल रहा है। कम्प्यूटर, इंटरनेट और सूचना-संचार के अन्य साधनों ने हमारी गति और बढ़ा दी है। भूमण्डल के किसी भी कोने में होने वाली घटना हमें प्रभावित और संवेदित कर रही है। ये बातें साहित्य की नयी-नयी विधाओं में नये-नये रूपों में व्यक्त हो रही हैं। आज के साहित्य और एक दशक पहले के साहित्य में बहुत फ़र्क आ चुका है। साहित्य की प्रत्येक विधा में लगातार नयी रचनाएँ आ रही हैं, यहाँ तक कि नयी-नयी विधाएँ भी स्वीकृत और स्थापित होती जा रही हैं। पहले जितना एक शताब्दी में लिखा जाता था, अब एक दशक में लिखा जा रहा है। अत: नयी साहित्यिक उपलब्धियों को साहित्य के इतिहास में अंकित करने की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है।

यह पुस्तक आज से लगभग एक दशक पहले प्रकाशित हुई थी और इसके तीन संस्करण छप चुके हैं। इस बीच साहित्य जगत् में बहुत कुछ बन-बदल गया है। इसलिए इस पुस्तक के संशोधन, परिवर्धन और कुछ पुनर्लेखन की आवश्यकता अनुभव हुई। इस पुस्तक में हर विधा की अद्यतन उपलब्धियों को जोड़ दिया गया है। गीत, ग़ज़ल और जनवादी कविता को तो पहले ही शामिल किया जा चुका था, इस संस्करण में बिल्कुल नये विमर्शों—उत्तर आधुनिकता और साहित्य, दलित-विमर्श और साहित्य, स्त्री-विमर्श और साहित्य तथा आदिवासी विमर्श और साहित्य को भी पहली बार (और साहित्य के इतिहास में भी पहली बार) व्यवस्थित ढंग से मूल्यांकित और प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह सही अर्थों में **हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास** है।

हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

[द्वितीय खण्ड]

[आधुनिक काल (सन् 1850 से 1920 ई०)]

डॉ० कुसुम राय

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 408

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-860-5

अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-861-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास' (दसवीं से उन्नीसवीं शती तक) सन् 2008 ई० में प्रकाशित हुआ था। वैसे तो इसको आधुनिक काल तक के सम्पूर्ण साहित्य के अध्ययन तक ले जाने का विचार था किन्तु बाद में आकार-प्रकार की विपुलता को देखते हुए इसे दो खण्डों में समेटने का लक्ष्य रखा गया। किन्तु पुन: इसका कलेवर विस्तृत होता देखकर इसका तीन खण्ड कर देने का निश्चय किया गया। द्वितीय खण्ड— आधुनिक काल (1850 से 1920 ई० तक) स्वतन्त्र रूप में पहली बार ग्रन्थ-रूप में प्रस्तुत है। इस पुस्तक में सन् 1850 से लेकर 1920 ई० तक की साहित्यिक गतिविधियों को यथासम्भव समग्र रूप में समेटने की कोशिश की गयी है।

द्वितीय खण्ड में विधागत तथा कालगत साहित्यिक सामग्रियों को ही एक साथ रखने का प्रयत्न किया गया है। इसमें काल-विशेष के साहित्यकारों की कालगत रचनाओं का ही सारगर्भित आकलन किया गया है, काल की सीमा के बाहर लिखी जाने वाली रचनाओं को छोड़ दिया गया है क्योंकि एक साहित्यकार को काल की सीमा में आबद्ध कर देना उसमें होने वाले परिवर्तन की गतिविधि का समुचित मूल्यांकन की प्रक्रिया में बाधा देना है। इसलिए इस पुस्तक में कृतिकार तथा उसकी कृतियों का यथोचित विवेचन-विश्लेषण करने हेतु काव्यरूप के साथ काव्य-विधाओं की विकास-प्रक्रिया तथा उनकी प्रवृत्तियों का यथेष्ट ध्यान रखा गया है।

लेखिका ने कई वर्षों के अनवरत परिश्रम से हिन्दी साहित्य के इतिहास के वस्तुनिष्ठ अध्ययन की कोशिश की है ताकि हिन्दी साहित्य की अविच्छिन्न परम्परा में तद्विषयक अधिकतम तथा गहनतम जानकारी सम्भव हो सके। इस परिश्रम साध्य कार्य का उद्देश्य अधीत्सु को अधिकाधिक लाभान्वित कराना है। इसमें तथ्यों की सूक्ष्मता से खोज का प्रयत्न है।

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

कर्नाटक संगीत पद्धति

डॉ० आर०वी० कविमण्डन

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

रायल अठपेजी पृष्ठ : 104

अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-852-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कर्नाटक संगीत अथवा दक्षिण भारतीय संगीत एक बड़ी वैज्ञानिक कला है। इसकी बारीकियों से जो भी अवगत हो जाये, वह संसार के अन्य किसी भी प्रकार के संगीत पर आसानी से प्रभुत्व प्राप्त कर सकता है। कर्नाटक संगीत अगर कृति-प्रधान है तो, हिन्दुस्तानी संगीत अथवा उत्तर भारतीय संगीत श्रुति-प्रधान है। अर्थात् कर्नाटक संगीत में कृतियों (प्रतिपादित की जाने वाली रचनाएँ) का बाहुल्य और वैविध्य है। यहाँ 'मातु' (कृतियों का साहित्य) और 'धातु' (संगीत सामग्री) को समान प्रधानता दी जाती है। हजारों रागों के साथ-साथ सैकड़ों तालों से भरपूर इस संगीत की परम्परा और सम्पत्ति अपार और महत्त्वपूर्ण है। भाव, राग और ताल के अपूर्व और परम-पवित्र संगम से रसिक महाजन पुनीत हो जाते हैं। गायन के अलावा अनेक वाद्यों पर इस संगीत की प्रस्तुति श्रोताओं की बुद्धि और हृदय पर अमिट प्रभाव डालने में सक्षम है।

कर्नाटक संगीत की कला और तंत्र दृढ़ और निश्चित सिद्धान्तों और तत्त्वों पर आधारित हैं। उसकी संरचना, चलन, अलंकारिता आदि प्रत्येक अंश सकारण और सतर्क है। 'गमक' (नाद अथवा स्वर-सृष्टि को अलंकृत करने वाला तत्त्व) इस संगीत की आत्मा है। उसकी विविधता और प्रभाव ध्याननीय है। प्रतिभाशाली कलाकार अपनी विशिष्ट और सपरिश्रम साधना एवं परमात्मा और गुरु के कृपाशीर्वाद से अगाध और अपार 'मनोधर्म' (संगीत कल्पना) को प्राप्त कर लेता है। गम्भीर और गहन 'मनोधर्म' सुन्दर और आकर्षक संगीत सृष्टि कर सकता है।

कन्नड़ साहित्य के संत-कवि-समाज सुधारक श्री पुरंदरदास 'कर्नाटक संगीत पितामह' कहलाते हैं। उन्होंने अपनी छोटी-छोटी रचनाओं के द्वारा कर्नाटक संगीत के अभ्यासियों का महदुपकार किया। उन्हीं के द्वारा अत्यन्त सुलभ-साध्य मायामालवगौल राग में सिद्ध किये गये सरली जंटी, दाटु वरिसै, सूलादि सप्त ताल अलंकार, पिल्लारी गीते आदि प्रारम्भिक पाठों से ही हर एक कर्नाटक संगीत कलाकांक्षी अपने कलाभ्यास का श्री गणेश करता है। इनसे क्रमशः स्वर-साधना और दृढ़ता, लय-साधना और लय-प्रभुता तथा साहित्य के महत्त्व से विद्यार्थी सुपरिचित हो जाता है।

इन सबके बारे में काफी सामग्री और जानकारी संस्कृत, अंग्रेजी, कन्नड़, तेलुगु आदि भाषाओं में उपलब्ध है लेकिन हिन्दी भाषा में बिलकुल नहीं है। इस घोर अभाव की पूर्ति डॉ० आर०वी० कविमण्डन द्वारा लिखित 'कर्नाटक संगीत पद्धति' नामक इस पुस्तक ने की है। यह एक स्तुत्य प्रयत्न है। यत्र-तत्र किये गये हिन्दुस्तानी संगीत के साथ तुलनात्मक उल्लेखों ने विषय-ग्रहण को आसान बनाया है। कर्नाटक संगीत का बहु मुख्य भाग मेलकर्ता रागों (थाट) की सूची हिन्दुस्तानी स्वर-रूप तथा उत्तर भारतीय नामों के साथ छापी गयी है वह औचित्यपूर्ण ही है।

यह पुस्तक निःसन्देह ही संगीत क्षेत्र को प्रशंसनीय देन है। विषय-वस्तु की योजना, उसकी प्रतिपादन शैली और लेखक की आस्था ने सचमुच ही चमत्कार कर दिया है।

चैती

डॉ० शान्ति जैन

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 128

अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-889-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'चैती' का काव्यात्मक साहित्य मुख्यतः ऋतुपरक रहा। रसराज शृंगार भी यदा-कदा उसमें अपनी छटा दिखाता रहा। धुन उसकी मूलतः खमाजी रागों में रमती रही। दीपचन्दी की मंथर गति में वह अपना सहज सौन्दर्य बिखेर अन्तरे के बाद स्थाई पर आ जब वह कहरवा भी लग्गी में आबद्ध स्वर लय की छटा बिखेरने लगती तो श्रोता भाव-विभोर हो जाते। उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल में उपजी पनपी कजली और चैती दोनों आगे चलकर उस उपशास्त्रीय संगीत शैली की जननी बनी जिसे आज हम ठुमरी के नाम से जानते हैं।

साहित्य में चैत के महीने को मधुमास की संज्ञा दी गई है। नाम सम्बन्ध से मधुमास के गीत अर्थात् चैती गीत बड़े सरस, मोहक और लुभावने होते हैं।

चैती सीमित क्षेत्र की अत्यन्त कर्णप्रिय गीतशैली है, जो बिहार तथा उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से प्रचलित है। इसका गायन फाल्गुन पूर्णिमा की रात से आरम्भ होकर सम्पूर्ण चैत्रमास तक चलता रहता है। वसन्त की परिधि में आने के कारण इन गीतों में मधुऋतु की मादकता सहज स्वाभाविक रूप से दिखाई पड़ती है। वासन्ती शृंगार भाव इन गीतों से छलक छलक पड़ता है।

'चैती' हिन्दुस्तानी संगीत की सही अर्थों में चहेती है। डॉ० शान्ति जैन ने कलाकार एवं कवयित्री दोनों रूपों में ख्याति पाई है। 'चैती' पुस्तक 1980 में उ०प्र० संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ से प्रकाशित हुई थी। 1983 में यह बिहार सरकार के राजभाषा विभाग से पुरस्कृत हुई। दूसरे संस्करण के लिये यह पुस्तक दस वर्षों से प्रतीक्षारत थी।

पारम्परिक गायन शैली के पुनर्प्रतिष्ठापन के लिये डॉ० शान्ति जैन की 'चैती' सहायक सिद्ध हुई है और आगे भी होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

रंग यात्रा

डॉ० आभा गुप्ता ठाकुर

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 140 + 32 पृष्ठ श्वेत श्याम चित्र (आर्ट पेपर)

सजि. : रु० 350.00 ISBN : 978-81-7124-854-4

अजि. : रु० 160.00 ISBN : 978-81-7124-855-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'अन्य साहित्यिक रूपों की अपेक्षा नाटक में समाज में प्रचलित सत्-असत् प्रवृत्तियों का प्रकाशन अधिक होता है। नाटक के माध्यम से दर्शक यह देखने में समर्थ होता है कि उसका अपना समाज किस दिशा में बढ़ रहा है। वह उन सभी प्रवृत्तियों से परिचय पा लेता है जो जातीय विकास में बाधक हो सकती हैं।'

('नाटक का स्वरूप' लेख से उद्धृत)

प्रस्तुत पुस्तक 'रंग-यात्रा' में डॉ० आभा गुप्ता ठाकुर द्वारा नाटक और रंगमंच से सम्बन्धित समय-समय पर लिखे लेखों एवं शोध-पत्रों को संकलित किया गया है। इन लेखों में न केवल हिन्दी नाटक और रंगमंच से जुड़े महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर मौलिक ढंग से विचार किया गया है, बल्कि भारतीय रंगमंच के महत्त्वपूर्ण नाटकों का तुलनात्मक विश्लेषण भी है। पुस्तक चार भागों में विभक्त है, हिन्दी रंग-समीक्षा से शुरुआत कर भारतीय रंग-परिदृश्य एवं तुलनात्मक अध्ययन, विरासत और अन्त में विविध प्रस्तुतियों के माध्यम से नाटक एवं रंगकर्म से जुड़े विचारों एवं अनुभवों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया गया है। 'विरासत' खण्ड के अन्तर्गत हबीब तनवीर के व्याख्यान का हिन्दी अनुवाद तथा लेखिका द्वारा निर्देशित नाटक 'आधे-अधूरे' एवं 'अंधा युग' से सम्बन्धित छाया-चित्र एवं दस्तावेज पुस्तक को संग्रह योग्य बनाते हैं।

उम्मीद है कि नाटक एवं रंगकर्म से जुड़े सवालों पर गम्भीरता से विचार करने के लिए यह पुस्तक पाठकों को उद्वेलित करेगी।

अभिनव रस सिद्धान्त

डॉ० दशरथ द्विवेदी

पंचम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 128

अजि. : रु० 60.00 ISBN : 978-81-7124-875-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतीय संस्कृत-काव्य-शास्त्रीय रससिद्धान्त का मूल-स्रोत भरतमुनि का रससूत्र है। इस सूत्र की अत्यन्त विशद व्याख्या सर्वप्रथम आचार्य अभिनवगुप्त ने अपनी अभिनव-भारती में की। मम्मटादि आलङ्कारिकों का रस-विवेचन भी इसी अभिनव-कृत व्याख्या पर आधृत है। अद्यावधि अभिनव-भारती के इस अंश का अनुवाद यथोचित रूप से हिन्दी में नहीं किया गया है। डॉ० दशरथ द्विवेदी ने इस पुस्तिका में इसी अभाव की पूर्ति की है। वे अलङ्कार-शास्त्र के मर्मज्ञ हैं। यही कारण है कि उनका यह अनुवाद सरल, स्पष्ट एवं मूलैकाश्रित हो सका है। हमारा विश्वास है कि साहित्यानुरागियों एवं काव्यशास्त्र के जिज्ञासुओं के लिए यह कृति विशेष उपयोगिनी सिद्ध होगी।

परशुराम

(सांस्कृतिक अनूठा महाकाव्य)

श्री श्यामनारायण पाण्डेय

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 216

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-862-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कविवर श्यामनारायण पाण्डेय आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक श्रेष्ठ वीर काव्य प्रणेता के रूप में विख्यात थे। 'हल्दीघाटी' और 'जौहर' जैसे वीर-रस प्रधान प्रबन्ध काव्यों की रचना करके आपने प्रभूत यश अर्जित किया। प्रस्तुत प्रबन्ध काव्य **परशुराम** इसी परम्परा में रचित एक उत्कृष्ट कृति है। कवि ने तेईस सर्गों के इस सांस्कृतिक महाकाव्य में भृगुवंशावतंस भगवान् परशुराम को नायक के रूप में अवतरित किया है, प्रतिनायक है हैहय वंशी प्रतापी सम्राट सहस्रार्जुन। सहस्रार्जुन को कवि ने एक धर्म-विध्वंसक, अनाचार-रत, लोक-पीड़क, मदान्ध एवं निरंकुश शासक के रूप में चित्रित किया है। हैहयवंशी सहस्रार्जुन शक्तिमद से उन्मत्त होकर आश्रम संस्कृति प्रधान आर्य धर्म को समूल विनष्ट करने पर तुला हुआ था। भृगुवंशी परशुराम ने बिखरी हुई आश्रम-शक्ति को संघटित किया और अपने नेतृत्व में अत्याचारी सहस्रार्जुन का वध करके आर्य-धर्म की ध्वजा फहरायी।

इसी समय परशुराम को सूचना मिली कि किसी अप्रतिम वीर ने शंकर का धनुष खण्डित कर दिया है। यह सुनकर वे क्रुद्ध हो उठे। दूसरे ही क्षण उनके अन्त:करण ने कहा कि शिव धनुष को तोड़ने वाला कोई साधारण लौकिक व्यक्ति नहीं होगा। सचमुच शिव-धनुष को भंग करके सीता का वरण करने वाले राम साक्षात् धर्म-विग्रह नारायण थे।

इस प्रकार कविवर श्यामनारायण पाण्डेय ने दो अवतारों से जुड़ी हुई पौराणिक कथा को व्यापक सांस्कृतिक सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है।

जौहर

(वीर-करुण-रस-सिक्त अद्वितीय महाकाव्य)

श्री श्यामनारायण पाण्डेय

संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 236

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-863-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

''फूँक दो उस राष्ट्र को जहाँ स्वाभिमान पर मर मिटनेवाले पुरुष नहीं, आग लगा दो उस देश में जहाँ पातिव्रत की रक्षा के लिए धधकती आग में अपने को झोंक देनेवाली स्त्रियाँ नहीं और पीस दो उस समाज को जो अपना अधिकार दूसरों को सौंप कर बँधे हुए कुत्ते की तरह याचक आँखों से उसकी ओर देखता है।''

'जौहर' की कहानी ऐतिहासिक है। इसका विवरण मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित इतिहास में भी मिलता है। अलाउद्दीन की काली करतूतों का यह एक जीवन्त उदाहरण है, सबूत है। पद्मिनी का ही नहीं, गुजरात के कर्णराय की रानी कमला का भी अपहरण करना उसका ध्येय रहा। निराशा सिर्फ पद्मिनीवाले काण्ड में हुई, सफलता कमला काण्ड में मिली, देवगिरि के राजा की पुत्री छिताई को छीनने में भी वह सफल ही हुआ। इन कृत्यों को कोई एक धर्म अपनी अगर विजय माने तो नि:सन्देह उस कृत्य की जघन्यता पर मानवता थूकती है। 'जौहर' में यदि उसकी निकृष्टता का चित्रण है तो वह ऐतिहासिक आधार से पुष्ट है। कवि की कल्पना यदि सत्य की एक बूँद को समुद्र में बदल दे तो यह उसकी सफलता ही है, साम्प्रदायिक क्षुद्रता नहीं।

इस काव्य में नारी जाति के सम्मान को राजाओं, बादशाहों, सम्राटों के झुके हुए मुकुट प्रणाम करते हैं तो यह कवि की क्षमता का सबूत है। 'जौहर' उनका एक अच्छा काव्य है। इसमें वर्णित मानवमूल्य हमें आकृष्ट करते हैं, स्वदेश के लिए मर-मिटनेवाले गोरा बादल की स्मृतियाँ मन को गर्वीले जोश से भर देती हैं, भावना और गहराई देती हैं, मस्तिष्क में ऊष्मा जगाती हैं और निश्चेष्ट पाठक को भी कुछ क्षणों के लिए मातृभूमि के चरणों में झुक जाने के लिए विवश करती हैं।

वेद व विज्ञान

स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती

चतुर्थ संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 292

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-864-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतीय संस्कृति और साधना का मूल है वेद। उस वेद में ऋषि का प्रज्ञान प्रतिफलित है। जगत् का आदिमतम यह ग्रन्थ भाव और भाषा में आज भी दुरवगाह बना हुआ है। प्रज्ञान अथवा बोधि के इस प्रकाश को बुद्धि के द्वारा पकड़ने जाकर किसी ने समझा कि वह कृषकों का गीत है, अर्थात् अशिक्षित आदिम मानव का असम्बद्ध प्रलाप है, और किसी ने सोचा कि प्रकृति के नाना ताण्डव से भीत, सन्त्रस्त, असहाय मानव का आर्तनाद है, या एक अदृश्य शक्ति के सामने मूढ़ मानव के तुष्टि-साधन का आकुल प्रयास और व्याकुल प्रार्थना है।

वर्तमान ग्रन्थ स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती के पूर्वाश्रम में अध्यापन-काल में दिये गये कुछ भाषणों और लेखों का संकलन है। इसमें आपने 'दुर्व्याख्याविष-मूर्च्छिता' वेदवाणी को मानो पुनरुज्जीवित करके स्वमहिमा में प्रतिष्ठित कर दिया है। वेद का प्रज्ञान और आधुनिक विज्ञान एक ही तत्त्व का प्रतिपादन करता है, ऐसा आश्चर्यपूर्ण समन्वय आपने दिखाया है एवं उसके द्वारा अकाट्य भाव से यह भी प्रमाणित किया है कि वेद अपरिणत-बुद्धि आदिम मानव का असम्बद्ध प्रलाप-मात्र नहीं है, चरमबोधि का परम सुसम्बद्ध प्रकाश है। आर्यसभ्यता और संस्कृति के यदि हम यथार्थ उत्तराधिकारी हों तो उस संस्कृति के स्वरूप को जानने के लिये यह अमूल्य ग्रन्थ हममें से प्रत्येक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

गुप्त भारत की खोज

पॉल ब्रंटन

संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 312

अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-888-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस पुस्तक का नाम यदि 'पवित्र भारत' होता तो बहुत ही उचित होता, कारण कि यह वर्णन उस भारत की खोज का है जो पवित्र होने के कारण ही गुप्त है। जीवन की अति पवित्र बातें कभी साधारण जनता के सामने प्रदर्शित नहीं की जातीं। मनुष्य का सहज स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि वह ऐसी बातों को अपने ही अन्तरतम तल के निगूढ़ कोषागार मे ऐसी सावधानी के साथ छिपाये रखता है कि शायद ही किसी को उनका पता लग पाता हो। उनका पता लगा लेने वाले वे ही थोड़े से व्यक्ति होते हैं जिनको आध्यात्मिक विषयों की सच्ची लगन होती है।

व्यक्ति के समान ही किसी देश के विषय में भी यह कथन पूर्ण रूप से लागू होता है। कोई भी देश अपने पवित्रतम विषयों को गोपनीय रक्खेगा। किसी भी अजनबी के लिए यह पता लगा लेना सरल नहीं है कि इंग्लैण्ड अपनी किन बातों को सबसे अधिक पवित्र समझता है। यही बात भारत के सम्बन्ध में भी ठीक है। भारत का अत्यन्त पवित्र अंग वही है जो अत्यन्त गुप्त है।

गुप्त विषयों की खोज करना बड़े परिश्रम और लगन का कार्य है; फिर भी सच्ची लगन के साथ खोज करने वाले को अन्त में उनका पता लग ही जायगा। जो पूर्ण मनोयोग और सच्चे संकल्प के साथ खोज के कार्य में लगते हैं वे अन्त में सफल ही होते हैं।

श्री ब्रण्टन की लगन इसी प्रकार की थी और वे अन्त में सफल ही हुए। उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; क्योंकि और देशों की भाँति भारत में भी आडम्बरपूर्ण आध्यात्मिकता का जाल फैला हुआ है और सत्य का पता लगाने के लिए इस झूठे जाल को काट कर आगे कदम रखना पड़ता है। सच्ची आध्यात्मिकता के जिज्ञासु को अगणित आध्यात्मिक ढोंगियों और नटों जैसी कलाबाजी करने वाले व्यक्तियों के झुण्डों की उपेक्षा करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है। इन लोगों में बहुतेरे ऐसे भी होते हैं जिन्होंने अपने मन और शरीर पर काफी अधिकार प्राप्त करके उन्हें पूर्ण रूप से नियन्त्रित कर लिया है। वे अपने चित्त को एकाग्र करने में चरम सीमा तक पहुँच गये हैं। इनमें से कितने ही इस प्रकार की साधनाओं द्वारा अज्ञात शक्तियाँ प्राप्त करने में भी सफल हुए हैं।

इन सब में भी अपने ढंग की रोचकता होती है। मनोविज्ञान का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों के अध्ययन तथा परिशीलन के लिए वे उचित सामग्री हो सकते हैं। पर वे सच्चे साधु अथवा योगी नहीं कहे जा सकते। वे ऐसे स्रोत नहीं हैं, जिनसे आध्यात्मिकता की धारा बह निकले।

श्री ब्रण्टन जिस गुप्त और पवित्र भारत की खोज करने गये थे उसका इस कोटि के व्यक्तियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। श्री ब्रण्टन ने उन्हें देखा, उन्हें परखा और उनका वर्णन भी किया। परन्तु उन्हें पीछे छोड़ते हुए वे अपने खोज-कार्य में आगे बढ़े। वे आध्यात्मिक अनुभूति के शुद्धतम और अत्यन्त निर्मल रूप का दर्शन करना चाहते थे और अन्त में उनकी साध पूरी भी हुई।

श्री ब्रण्टन ने नगरों से दूर निर्जन नीरव जंगलों में, या हिमालय की तराइयों में भारत की मूर्तिमान पवित्रता का दर्शन पाया है, क्योंकि भारत के सच्चे साधु-महात्मा ऐसे ही स्थानों में जा कर निवास करते हैं। श्री ब्रण्टन सबसे अधिक 'महर्षि' के साक्षात्कार से प्रभावित हुए। भारत-भर में वे अपने ढंग के केवल अकेले नहीं हैं। भारत के कोने-कोने की छानबीन करने पर इसी उच्चकोटि के व्यक्ति मिल सकते हैं, परन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं किन्तु बहुत ही कम है। ये ही भारत की सच्ची प्रतिभा के परिचायक हैं और ऐसे ही सच्चे साधुओं में परम पिता परमेश्वर विभिन्न अंशों में अपने को व्यक्त करता है।

अत: ऐसे महात्मा ही इस जगत् में जिज्ञासुओं की खोज के परम योग्य लक्ष्य है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में इसी प्रकार की एक सफल खोज का परिणाम हमारे सामने उपस्थित किया गया है। **—फ्रांसिस यंगहस्बैण्ड**

जैन कला तीर्थ : देवगढ़

प्रो० मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी

डॉ० शान्ति स्वरूप सिन्हा

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 192 + 80 पृ० चित्र (आर्ट पेपर)

सजि. : रु० 300.00 अजि. : रु० 200.00

उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित कला-तीर्थ—देवगढ़ का भारतीय-कला के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। यहाँ कला का अजस्र प्रवाह प्रागैतिहासिक काल से निरन्तर 16वीं-17वीं शती ई० तक द्रष्टव्य है, जिसमें वैदिक-पौराणिक और जैन दोनों ही परम्पराओं के कलावशेष हैं। **जैन कला तीर्थ : देवगढ़** शीर्षक प्रस्तुत पुस्तक में देवगढ़ की जैन कला के सभी पक्षों का पहली बार विस्तारपूर्वक अध्ययन हुआ है। जैन प्रतिमाओं और उनके प्रतिमालक्षण की व्याख्या कलात्मक और शास्त्रीय दोनों ही दृष्टियों से की गयी है। इस पुस्तक में देवगढ़ की तीर्थंकर, यक्ष-यक्षी, भरत-मुनि, बाहुबली, सरस्वती, क्षेत्रपाल एवं आचार्य और उपाध्याय मूर्तियों से सम्बन्धित नवीन सर्जनाओं को भी देवगढ़ के अप्रतिम योगदान की दृष्टि से रेखांकित किया गया है। प्रारम्भ के अध्यायों में देवगढ़ के दशावतार एवं वराह मन्दिरों सहित अन्य वैदिक-पौराणिक परम्परा की कला-सामग्री पर भी सम्यक् दृष्टि से विचार किया गया है जो देवगढ़ में धार्मिक एवं सामाजिक सामंजस्य के साक्षी हैं।

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान

सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 120 + 12 पृ. रंगीन चित्र + 4 पृ. श्वेत श्याम चित्र (आर्ट पेपर)

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-844-5

अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-845-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अध्यात्म-क्षेत्र में दिव्य विभूतियों के दर्शन और आशीर्वाद का विशेष महत्त्व है। हमारे यहाँ जीवन-यात्रा के मार्ग अनेक हैं, साधन पृथक्-पृथक्। दिव्यशक्ति से साकार महापुरुष ही सुगम मार्ग से सुपरिचित कराकर लक्ष्य-प्राप्ति करा सकते हैं। आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए तत्त्वानुशीलन और गुरु का निदर्शन अत्यावश्यक है। उत्तरांचल में एक ऐसे ही महात्मा एवं दिव्यात्मा के दर्शन का सौभाग्य लोगों को प्राप्त हुआ है, जिनके दृष्टिपात से योग-क्रिया के सारे गूढ़तम रहस्य खुल जाते हैं। इतना ही नहीं, त्रिनेत्र भी खुल जाते हैं। बाबा हैड़ाखान ने, जिन्हें शिवस्वरूप अवतारिक महापुरुष कहा जाता है, न केवल अपने देश भारत में, अपितु सुदूर विदेशों में तत्वान्वेषण का मार्ग प्रशस्त किया है। वे कभी साकार, कभी निराकार होकर अपने प्रेमी भक्तों को दर्शन देते रहते हैं। इस पुस्तक के लेखक को, जो भारतीय वायुसेना के बड़े अधिकारी रहे हैं, बाबा के दर्शन हुए। उनके आशीर्वाद से इनका जीवन आनन्दमय हो गया। बाबा हैड़ाखान के सम्पर्क में आने के उपरान्त इन्हें जो रहस्यपूर्ण अनुभव हुए, उनका व्यापक वृत्तान्त इस पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय है।

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग

बच्चन सिंह

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 544

अजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-856-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बाबा नीब करौरी अपने समय के महानतम संत थे। उनके जन्म काल के बारे में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है लेकिन कुछ भक्त उनके जीवन का विस्तार 18वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक मानते हैं। बहरहाल उन्होंने 11 सितम्बर 1973 को लौकिक शरीर त्याग दिया।

बाबा नीब करौरी सर्वज्ञ थे, सर्वशक्तिमान थे और सर्वव्यापक थे। वे कहते थे, ''मैं हवा हूँ, मुझे कोई रोक नहीं सकता। मैं धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए पृथ्वी पर आया हूँ।''

बाबा समसामयिक संतों में सर्वोपरि थे। कुछ लोग उन्हें साक्षात् हनुमानजी का अवतार मानते थे तो कुछ संतों का कहना था कि नीब करौरी महाराज को हनुमानजी की सिद्धि है। वह कुछ भी कर सकते हैं। यदि मृत व्यक्ति को पुनर्जीवन देने की क्षमता किसी में है तो वह एकमात्र संत हैं—नीब करौरी बाबा।

बाबा ने कथा, प्रवचन, आडम्बर, प्रचार-प्रसार से दूर रह कर दीन-दु:खियों की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। भक्तों का आर्तनाद सुनकर तुरन्त पहुँच जाते और उसे संकट से उबार देते। वे भक्त-वत्सल थे, गरीबनवाज थे और संकटमोचक थे।

बाबा नीब करौरी का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक क्रिया-कलापों से भरा हुआ है। कोई शक्ति उन्हें एक जगह बाँध कर नहीं रख सकती थी। वे एक साथ भारत में भी होते और लंदन में भी। लखनऊ में भी और कानपुर में भी। पवन वेग से क्षण भर में ही कहीं भी अवतरित हो जाते। उन्हें कमरे में कैद करके रखना असम्भव था। सूक्ष्म रूप में बाहर निकल जाते और वांछित कार्य सम्पन्न कर लौट आते। महाराजजी का हर क्षण अलौकिक होता—वे स्वयं अलौकिक जो थे।

महाराज जी के भक्तों ने उनकी अलौकिक घटनाओं, लीलाओं और प्रसंगों को विभिन्न पुस्तकों में संकलित किया है। ये पुस्तकें अंग्रेजी में भी हैं और हिन्दी में भी। इस पुस्तक में महाराज जी के सभी अलौकिक क्रिया-कलापों को एक जगह संकलित करने का प्रयास किया गया है। ऐसे विरल महात्मा के दर्शन और भक्ति से अनेक व्यक्तियों को जीवन-यात्रा में सुखद आनन्द और शान्ति का बोध हुआ है।

भारतीय धर्म साधना

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 148

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-89498-53-5

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

म०म० पण्डित गोपीनाथ कविराज मनीषी थे। भारतीय अध्यात्म, धर्म तथा साधना का उन्होंने गम्भीर चिन्तन किया। समय-समय पर अध्येताओं ने अपने शोधपरक तथा अध्यात्म ग्रन्थों की भूमिका लिखने के लिए कविराज जी से अनुरोध किया। उन्होंने सहृदयतापूर्वक अध्येताओं का मार्गदर्शन किया और उनके ग्रन्थों की भूमिका भी लिखी। धर्म दर्शन विषयक ये भूमिकाएँ स्वतन्त्र आलेख हैं जो विचारपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करती हैं। यह संग्रह इसी उद्देश्य से प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि भारतीय धर्म तथा साधना पर कविराज जी के विभिन्न ग्रन्थों में भूमिका-स्वरूप बिखरी सामग्री एकत्र रूप में पाठकों को सुलभ हो जाय।

क्रमसाधना

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 124

अजि. : रु० 70.00 ISBN : 978-81-89498-54-2

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

प्रात: स्मरणीय ऋषिकल्प वाणीमूर्ति कविराज जी के अन्तराकाश में क्रमिक साधना का जो आविर्भाव हुआ था, उसका वाङ्मय विग्रह 'क्रमसाधना' के रूप में आज अपना आत्मप्रकाश कर रहा है। उपलब्धि तथा साक्षात्कार की चरम स्थिति पर आसीन प्रातिभ ज्ञान सम्पन्न मनीषीगण के लिए क्रमसाधना का कोई मूल्य नहीं होता, क्योंकि परमेश्वर के तीव्रातितीव्र शक्तिपात के कारण वे अक्रम रूप से, युगपत् रूप से, तत्काल, कालावधिरहित स्थिति में परम ज्ञान तथा परमप्राप्तव्य से एकीभूत हो जाते हैं, तब भी पशुपाश में आबद्ध, मोहकलित प्राणीमात्र के लिए दयापरवश होकर वे क्रमसाधना की व्यवस्था करते हैं। साधारण प्राणी अक्रम ज्ञान की अवधारणा कर सकने में पूर्णत: अक्षम है। उसका अस्तित्व, अधिकार तथा पात्रता अभी निम्नभूमि में ही आबद्ध है। उसे स्तरानुक्रम से, एक-एक स्तर का अतिक्रमण करते हुए, उर्ध्वपथ का पथिक बनना होगा। क्रमश: क्रमिक साधना का अवलम्बन लेकर आत्मसत्ता पर आच्छन्न जाड्यतम को अपसारित करना होगा, इसके अतिरिक्त कोई मार्ग ही नहीं है।

गोपी-गीत

(दार्शनिक विवेचन)

अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराज

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 548

अजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-874-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सकलशास्त्रपारावारीण द्वादशदर्शन-काननपञ्चानन निगमागमपारदृश्वा परब्रह्मस्वरूप पूज्यपाद श्री स्वामी करपात्रीजी महाराज के गोपी-गीतविषयक प्रवचनों का संग्रह 'गोपी-गीत' सुधी सहृदय तथा भक्त पाठकों के लिए प्रकाशित कर हम अपने को अत्यन्त कृतकृत्य मान रहे हैं। पूज्य चरणों का श्रीमद्भागवत पर असाधारण स्वाध्याय था। इस महान् ग्रन्थ के वे सभी कोने झाँक आये थे। उनकी असाधारण अद्वैतनिष्ठा एवं तदनुसारिणी प्रतिभा उनके भक्त-हृदय के अन्तरतम को कभी बोझिल नहीं कर सकी। भगवद्विषय तीव्र विरहजन्य ताप की ज्वाला में तप्त होकर भगवान् के ही शरण में अन्तिम परम विश्राम पाने की इच्छा से समुद्भूत (जीवात्माओं की) प्राय: समस्त चेष्टाओं को वे अपने प्रवचनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के मनोहारी ढंगों से प्रस्तुत कर श्रोतृवृन्द के हृदय में सम्प्रयोग, विप्रयोग तथा उभयावस्था में भी रस का पोषण और उसकी सर्वथा स्वतन्त्रता (मोक्ष) को अत्यन्त सरल ढंग से स्थापित कर देते थे।

प्रस्तुत पुस्तक 'गोपी-गीत' की संकलयित्री श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला के विशेष अनुरोध पर पूज्यवर ने 'श्रीमद्भागवत' के दो अंश 'गोपी-गीत' और 'भ्रमर-गीत' का प्रवचन किया। 'गोपी-गीत' का प्रवचन तीन चातुर्मास्य में सम्पन्न हुआ जिसकी संकलनकत्री श्रीमती पद्मवाती झुनझुनवाला ने अत्यन्त मनोयोग से टेप कर उसकी प्रेस-कापी तैयार की। भ्रमर-गीत के प्रकाशन में अपना पूर्ण सहयोग देकर परमपूज्य चरणों में अपनी गुरुदक्षिणा समर्पण का इन्होंने प्रयास किया। आज पुन: उन्हीं के सहयोग से गोपी-गीत सहृदय पाठकों के हाथों में आ रहा है।

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

स्मृति शेष

साहित्यकार द्रोणवीर कोहली नहीं रहे

प्रख्यात उपन्यासकार, कहानीकार, बाल साहित्य के लेखक तथा *आजकल* एवं *बालभारती* पत्रिकाओं के सम्पादक श्री द्रोणवीर कोहली का 24 जनवरी, 2012 को गुड़गांव, हरियाणा स्थित अपने आवास पर निधन हो गया। श्री कोहली समकालीन हिन्दी साहित्यकारों में एक प्रतिष्ठित नाम और सशक्त हस्ताक्षर थे।

प्रो० अक्षय कुमार जैन का निधन

स्वतन्त्रता सेनानी, वरिष्ठ पत्रकार, श्रेष्ठ शिक्षक, समाज सेवी एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल के अध्यक्ष प्रो० अक्षय कुमार जैन का निधन 28 जनवरी 2012 को भोपाल में हुआ।

प्रोफेसर व्रजवल्लभ द्विवेदी का निधन

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित व सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के सांख्ययोग तंत्रागम विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी का निधन विगत 17 फरवरी को हो गया। आपको वर्ष 1983 में तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने 'राष्ट्रीय पंडित' पुरस्कार से सम्मानित किया था। इसके अलावा कालीदास पुरस्कार सहित अनेक विशिष्ट पुरस्कार व अन्य पुरस्कार से सम्मानित किये जा चुके हैं।

आपने कई विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की जिनमें से प्रमुख हैं—'एक विश्व : एक संस्कृति', 'भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय', 'भारतीय संस्कृति के मूल तत्व' आदि।

वरिष्ठ पत्रकार लक्ष्मीनाथ संड नहीं रहे

वाराणसी के वरिष्ठ पत्रकार लक्ष्मीनाथ संड का विगत 26 फरवरी की रात हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। दैनिक 'आज' से आरम्भ कर 'दैनिक जागरण' तक की दीर्घयात्रा से उन्होंने स्वयं विराम ले लिया।

पं० अमरनाथ मिश्र का निधन

वाराणसी में शास्त्रीय गायक पं० अमरनाथ मिश्रा (75 वर्ष) का विगत 15 फरवरी को फानी दुनिया को अलविदा कहने के साथ ही काशी में शास्त्रीय गायन की एक मजबूत कड़ी टूट गयी। उन्हें उत्तर प्रदेश संगीत अकादमी की ओर से अकादमी पुरस्कार, स्वरमणि अवार्ड, तान सम्राट जैसे तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।

प्रोफेसर सुकुमार अझिकोड नहीं रहे

प्रख्यात विद्वान और गाँधीवादी तथा नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के पूर्व अध्यक्ष प्रो० सुकुमार अझिकोड का 24 जनवरी को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। केरल के कन्नूर से सम्बन्ध रखने वाले प्रो० अझिकोड एक प्रकांड बुद्धिजीवी, लेखक, मानवतावादी, सांस्कृतिक पुरोधा, समर्पित धर्मनिरपेक्षतावादी, मानवाधिकारवादी एवं सामाजिक मूल्यों के प्रहरी थे। प्रो० अझिकोड की सबसे महत्त्वपूर्ण कृति 'तत्वमसि' (1984) को साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था। इसके अलावा, प्रतिष्ठित व्यालर सम्मान समेत इस कृति को कई सम्मान प्राप्त हुए थे।

कर्तार सिंह दुग्गल का निधन

पंजाबी के महत्त्वपूर्ण कथाकार कर्तार सिंह दुग्गल का पिछले दिनों दिल्ली में निधन हो गया। वे 95 वर्ष के थे।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित दुग्गल ने पंजाबी, उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी में कहानियों, उपन्यासों और नाटकों की रचना की। उन्हें पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया।

कथाकार विद्यासागर नौटियाल का निधन

प्रसिद्ध कथाकार स्वतन्त्रता सेनानी एवं कम्युनिस्ट नेता विद्यासागर नौटियाल का विगत 12 फरवरी की सुबह बेंगलूर में निधन हो गया। उनकी उम्र 79 वर्ष थी। उनके निधन की खबर से साहित्य जगत में स्तब्धता छा गई है। टिहरी राजशाही के विरुद्ध संघर्ष का झंडा बुलंद करने वाले नौटियाल जीवनभर किसान और ग्रामीण जीवन से जुड़ी समस्याओं, आकांक्षाओं व संघर्षों को अपने साहित्य के माध्यम से मुखरित करते रहे। 'यमुना के बागी बेटे', 'भीम अकेला', 'झुंड से बिछुड़ा', 'उत्तर बायां है' आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

उन्हें तीन महीने पहले साहित्य सेवा के लिए प्रतिष्ठित 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान', 'पहल' सम्मान और मध्यप्रदेश साहित्य परिषद के अखिल भारतीय वीरसिंह देव सम्मान से भी सम्मानित किया गया था।

शहरयार नहीं रहे

प्रख्यात शायर व ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता प्रो० कुंवर अखलाक मुहम्मद खान उर्फ शहरयार का विगत 13 फरवरी को निधन हो गया। 76 वर्षीय इस नगीने के जुदा होने से साहित्य बिरादरी में शोक की लहर दौड़ गई। अलीगढ़ के शहरयार को अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के मिंटो कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक़ किया गया।

डॉ० अम्बाशंकर नागर नहीं रहे

गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी और हिन्दी साहित्य परिषद के अध्यक्ष एवं गुजरात में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका का निर्वाह करने वाले डॉ० अम्बाशंकर नागर अब हमारे बीच नहीं रहे। उन्होंने 100 से भी अधिक छोटे-बड़े ग्रन्थों की रचना की तथा हिन्दी के प्राचीन कवियों और उनके ग्रन्थों की खोज, संग्रह और सम्पादन का महत्वपूर्ण कार्य भी किया।

ÒÖ¤ÚÌèØ ß¤¾×ØÖ ÂçÚß¤Ú ¥ÂÙè ¥Ÿ¤ÂçÚÌ Ö¤ßÖèÙè Ÿ¤hÁçÜ ¥íÂÌ ·¤ÚÌ¤ ãÐ

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का जनवरी-फरवरी (संयुक्तांक) 2012 का अंक प्राप्त हुआ। एक से एक बढ़कर विद्वानों के विचार, पुस्तकों की संक्षिप्त विवेचना एवं परिचय पढ़ने को मिले। हृदय प्रसन्न हो गया। क्या 'पाठकों के पत्र' स्तम्भ ऐसा मंच नहीं बन सकता जो जिज्ञासु-पाठकों की जिज्ञासा पूर्ण कर सके?

मैं एक अवकाश प्राप्त वैज्ञानिक हूँ। संस्कृत की पुस्तकों के सन्दर्भ लेने हेतु यदा-कदा मैं विद्वानों के पास जाता रहता था। जड़ी-बूटी तथा स्रोत के बारे में मेरे लेख लगभग 40 वर्ष पूर्व 'धर्मयुग' में तथा अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। कुछ वर्ष पूर्व मुझे एक सन्दर्भ मिला जो जगतगुरु आदि शंकराचार्य के केदार खण्ड एवं नीलकंठ क्षेत्र की यात्रा विवरण (अंग्रेजी भाषा) के बारे में था। सन्दर्भ का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार था, 'शंकराचार्य की भारत में विजयी यात्रा' जो उनके शिष्य अनंतानन्द जो उनके साथ यात्रा में थे उनके द्वारा लिखा गया था। जैसा कि लोग जानते हैं कि शंकराचार्य ने बद्रीनाथ धाम में विष्णु की मूर्ति की स्थापना की और वहाँ से वे केदारनाथ पहुँचे, जहाँ पर उनकी अकाल मृत्यु हो गई थी।

इस प्रसंग में यह भी लिखा गया था कि उनकी यात्रा कैलाश जाने की भी थी परन्तु अस्वस्थ होने के कारण जा न सके।

अनंतानन्द का यह यात्रा-वर्णन वास्तव में बड़ा रोचक होगा क्योंकि यह हमें उस समय के भूगोल, क्षेत्र, परिस्थितियों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देगा और इसकी खोज इतिहास की एक बड़ी उपलब्धि होगी। क्या आपके विद्वान पाठकों में कोई इसकी जानकारी उपलब्ध करा सकेगा?

डॉ० निरंजन चन्द्र साह
एम०एस०-78, सेक्टर-डी, अलीगंज
लखनऊ-24

पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' के 12वें वर्ष में प्रवेश पर बधाई एवं सतत अभ्युदय हेतु शुभकामनायें। विविध-विषयों पर शोधपूर्ण सम्पादकीय ने प्रभावित किया। प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने लेख 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते' के माध्यम से भारतीय संस्कृति में नारी की गरिमापूर्ण स्थिति एवं पाश्चात्य-परिधानों को धारण करने वाली नारियों को देखने से पनपने वाली दुर्वृत्तियों का अत्यन्त सशक्त चित्रण किया है। एतदर्थ लेखक को बधाई।

डॉ० पवन कुमार शास्त्री
अध्यक्ष एवं निदेशक
भारतीय ज्योतिष अनुसंधान संस्थान
वाराणसी

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

ब्रह्मर्षि श्री देवराहा बाबा : एक अंतर्यात्रा : लेखक : ललन प्रसाद सिन्हा, प्रकाशक : एस०एम०टी० नीलकमल (एस) प्रकाशन, एफ-6, समन बिहार अपार्टमेंट, प्लाट नं० 9, सेक्टर 23, द्वारिका, नई दिल्ली-110075, संस्करण : प्रथम-2012, मूल्य : 295/- रु०

× × संत-व्यक्तित्व का संधान, दिव्य आध्यात्मिक-अनुभूति की व्यंजना और संत-सान्निध्य में आत्म-साक्षात्कार का आलेखन जैसा दुरूह-कार्य संत-कृपा के बिना असंभव है। अपने जीवनकाल में ही मिथक बन चुके संत देवराहा बाबा से संबद्ध कतिपय प्रसंग-वृत्त एवं उनके आश्रमों की पड़ताल करते हुए ग्रन्थ के लेखक ने संत के प्रति एकनिष्ठ-भक्ति द्वारा इस कठिन कार्य को पूरा किया है। संत-सत्संग की अंतर्यात्रा ही इस आलेख की उपलब्धि है।

भ्रष्टाचार निर्मूलन एवं जन लोकपाल गठन आन्दोलन : प्रधान सम्पादक : डॉ० हरिश्चन्द्र विद्यार्थी, प्रकाशक : राष्ट्रनायक प्रकाशन, 16-9-330/ए-पुराना मलकपेट (रेसकोर्स रोड, निकट कागज़ कारखाना) हैदराबाद-500036, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 600/- रु०

× × पिछले वर्ष सन् 2011 में माननीय अण्णा हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार निर्मूलन एवं जनलोकपाल बिल को लेकर राष्ट्रीय जन-जागरण के परिदृश्य में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में, इलेक्ट्रॉनिक-मीडिया में काफी विचार-विमर्श हुआ है। उसी बिन्दु पर विमर्श-परक 163 लेखों का संकलन है प्रस्तुत ग्रन्थ, जो अलग-अलग दृष्टि से जन-जागृति को समझने में उपादेय है।

राष्ट्रभाषा-राजभाषा हिन्दी एवं शिक्षा का वैश्विकरण : प्रधान सम्पादक : डॉ० हरिश्चन्द्र विद्यार्थी, प्रकाशक : राष्ट्रनायक प्रकाशन, हैदराबाद, संस्करण : प्रथम-2011, मूल्य : 400/-रु०

×× ग्रन्थ के विषय पर 49 आलेख एवं परिशिष्ट में 33 आलेखों द्वारा सम्पादक ने हिन्दी से जुड़े सारे प्रश्नों एवं उनके समाधान का प्रयत्न किया है। परिशिष्ट के आलेख शिक्षा में हिन्दी-प्रयोग एवं समस्याओं से सम्बद्ध हैं। ग्रन्थ के विषय के अनुसार निश्चित अनुक्रम न होने कारण संकलित-सामग्री में काफी बिखराव है।

दुनिया की सूरत बदलेगी : गोविन्द सिंह असिवाल, प्रकाशक : गोविन्द सिंह असिवाल द्वारा क्वालिटी प्रिंटर्स, 100 पोस्ट ऑफिस के पास, जहाँगीराबाद, भोपाल - 462008, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 20/- रु०

सामाजिक अन्याय एवं आर्थिक शोषण के खिलाफ प्रतिबद्ध लेखन द्वारा व्यापक जनसंघर्ष को स्वर देने का उपक्रम हैं इस संग्रह की काव्य रचनाएँ। ''श्रमजीवी हाथों में होगी देश की शासन डोर/खुशियों की सौगातें होंगी और सुनहली भोर।''

पाती (जनवरी 2012/भोजपुरी) **:** सम्पादक : डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001

भाषा-भारती संवाद : सम्पादक : नृपेन्द्र नाथ गुप्त, प्रज्ञा प्रकाशन, श्री उदित आयतन, ब्रह्मस्थान पथ, शेखपुरा, पटना-800014

मंथन (वर्ष-17/साहित्य विशेषांक 2012) **:** प्रधान सम्पादक : महेश अग्रवाल, आफिस नं० 14, अग्रसेन टावर, तलमजला, कोलबाड रोड, प्रताप सिनेमा के पास, ठाणे (प०)-4006001

मनस्वी (जनवरी-फरवरी 2012) **:** सम्पादक : मुरली मोहन, एम-8, कृष्णदीप काम्प्लेक्स, महारानी रोड, इन्दौर-452007

सुलभ इण्डिया (2 अंक/जनवरी एवं फरवरी 2012) **:** सम्पादक : एस०पी०एन० सिन्हा, आर०जेड-83, महावीर इन्क्लेव, पालम-डाबड़ी मार्ग, नई दिल्ली-110045

साँझी एक्सप्रेस (फरवरी 2012) **:** सम्पादक : सुरेश जांगिड़ उदय, अक्षरधाम, डी०सी० निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल (हरियाणा)

ÖæÚ Ì èØ ßæ¾×Ø

मासिक

वर्ष : 13 **मार्च-अप्रैल 2012** **अंक : 3-4**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)